

जैन धर्म प्रकाश.



जो जद्धा: केयमविद्या? कोऽयं पोहः? केयमात्मवश्वनता? केयमात्मविकिता? येन युयं गृथ्यथ विषयेषु। मुक्तय कद्मत्रेषु। सुन्त्यय धनेषु। स्तिथ्य म्यजनेषु। हृथ्यथ योवनेषु। त्रृथ्यथ निअस्त्रेषु। पुष्यथ प्रियसङ्केषु। रुथ्यथ हितोपदेशेषु। दुष्यथ गुणेषु। नद्यथ मन्मार्गीत्मत्स्त्रथस्पाहेषु। सहायेषु। प्रीयथ मांमार्गिकसुखेषु। न पुनर्गृथभृथस्य इानं। नानुशील्यथ दर्शनं। नानुतिष्ठथ चारित्रं। नाचरथ तपः। न कुरुथ संयमं। न संपादयथ सद्गृतगुणसंज्ञाज्ञाजनमात्मानमिति। पर्व च तिष्ठतां जबतां जो जद्धा निरर्थ-कोऽर्थं मनुष्यजबः। निष्फङ्गस्माद्वस्त्रिधानं। निष्प्रयोजनो जबतां परिक्लानाजिमानः। अकिञ्चिकरमिव जगवदर्शनासादनं। एवं हि स्वार्थवृत्तेः परमविशिष्यते। स च जबतामङ्गत्वमाह्वक्यति। न पुनश्चिरादपि विषयादिषु संतोषः। तत्र युक्तमेवमासितुं जवाह्वां। अतो मुक्तत विषयप्रतिबन्धं। परिहरत स्वजनसंहादिकं। विश्वयत धनज्ञनप्रयत्न्यसनं। परित्यजत निःशेषं सांसारिकापत्रजावाद्वं। गृहीत जागरतां जावंदीकां। विश्व संझानादिगुणगण-संचयं। पुरयत तेनात्मानं। जबत स्वार्थसाधका यावत्सञ्चिहिता जबतां वर्यं। उपमिति भवप्रपञ्चा कथा।

मुख्यतः ३० सुं.

जे. सं. १८९०. शाके १८३६.

अंक ३ नो.

चोरी निषेधक पद.

(राग सारंग-भन भाने नहि शो देश भमनतु—ज्येश्वर.)

पर ग्राम् समान, पर धन इतां जगमां चौर गम्यामध्ये;
ठोड़े दरभाश, आ लाव पर लव नरक्षतामुं छुण खाईये, टेक,

धन लाय चारनुं चांडाणे, ते चार हाथ देखुं आणे,
इरी खाय लाय भरी पाताणे।

ठोड़ी शारने नव पमे राष्ट्रे, शुद्ध वहां न चार इने भाष्टे,
पर सोंपे नहि लगवी शाष्टे।

५२० १

५२० २

कोई न करो. योस्तंभु नामे, अत्यन्त यामे हमेहाये,	
विधास न राखे डोहर राखे.	४२० ३
पशुं विस्तु अग्रहीषु देतां, पर वस्तु योतानी इहतां,	
शी चास्ते अग्रहीषु हेतां.	४२० ४
थन योस्तानी यामे न डेह, प्राये सोयप्रदिल्ली चार थदे,	
नव पेट भवत्य भूमि ज भदे.	४२० ५
परनी यामय नव अग्रहीष्य, पर गुणतुर्य याण नव योपवीष्य,	
सांकुण्यहं युर सुग्र अनुववीष्य.	४२० ६

ज्ञानसार सूत्र विवरण.

सर्व समृद्धि अष्टक. (२०)

(लेखक-अनित उत्तरदिल्लियम् ।)

ज्ञान-ज्ञानी प्रत्ये इत्य प्रेम-भावु मान याचवी जे डीट-अमरीना नाये ज्ञान-ज्ञानीना अनुयोदने यामी शके छे ते यदानुभावो निज धरतां ज सधगी अद्विजिदिने सहेजे प्रगतावी शके छे. तेथी अन्न प्रसंगागत सर्व समृद्धि-अष्टक शास्त्राकार वाखाले छे. —

नावद्विष्टप्रचारपु, मुदितेषु महात्मनः ॥

अंतरेनावभासने, स्फुटाः सर्वसमृद्धयः ॥ १ ॥

काव्य.थ— नावद्विष्टप्रचारपु देह नष्ट थर्गे छते भद्रात्मा गुरुपने अंतर-
मांज सर्व समृद्धिये. स्फुटतर भास्ते छे, अथात् नावद्विष्टप्रचारपु समूलाशुं हर थतां
पत्तवद्विष्टपुं अविकापिक निर्भव थतुं वय छे अने निर्भवा तत्त्वद्विज्ञाना योगे
सकल समृद्धि अहेजे घरमां प्रगट थाय छे, जेथी अडगननन्द प्राप्त थतां विष-
यासुक्ति विगेरे हृषि विकारो खतः विवय यामे छे अने निर्भवा ज्ञानादि सद्युगो
खतः प्रगटे छे. —

विवेचन— जे भद्रापुरुषने नावद्विज्ञानो प्रचार घाँथ थयो छे-इकाईयो
छे, अथात् जगताना बाह्य पदार्थ मावने केवे भर बाह्याछे, बाह्य कदिने के
पीडगणिक पिड जाले, छे, तेनी केवे इच्छित, परं इच्छावर्ती नयी, आत्माना
शुलु अथवा अतिक्रम कदिने के वास्तविक अद्वि जाले, छे, तेताज के अपी
छे, ते भेणनाने भाटेज केवे अतिक्रिय भयास छे तेवा भद्रात्मायोने-अनि

गतिशार यत्र विवरणः

५१

नहाराज्ञयोंतं जगतमां उत्तमं कुलेवती, औष गण्युती, वर्षण्युती तमाम प्रका-
रनी अद्विद्या प्रोताना आत्मामांके ले ये भगवन् भास थावे हे. १

या जगतमां ईद्रिनी, यहवर्तीनी, नारोद्रनी, शाकद, विष्णु अने अहमानी
तेमन् ग्राने तीर्थेऽर भगवन्तनी कदि औष गण्युती हे. तेमां तीर्थेऽर स्विवाय खीज-
नेनी के आज्ञाकादि कुलेवती के ते गण्युती तेना लूहयमां तुच्छ लागे हे; परंतु
तेनी उपमाने योज्य अवृत्ति असंतिक अद्विद्या तेनी यासे होय हे केवी ते प्रोताने
सर्व इत्यां औष मानी याके हे अने तीर्थेऽरनी पहवी पथ तेवा सिध्य योगीने
कांध मुरुडेल तागानी नथी, ये सर्वनी अद्विद्या आश्रे हो आत्मिक अद्विद्या
घटावे हे:-

समाधिनेदनं धैर्य, देखोलि: समताशाची ॥

शानं महाविष्णवं च, वासवव्रीरियं मुनेः ॥ ३ ॥

भावार्थ—सदैः-स्वाभाविक समाधिकृपी नंहनवन, धैर्यकृपी वज, संभ-
नारूपा ईद्रिणी, अने जानलगी विशाल विभान, अभी ईद्रिनी केवी उत्तम सहेयी
मुनिने प्रयमान ग्राने हे. अरे! तत्प्रविति निर्धार्थ मुनिसज्जने तो ईद्रियी पथ
अन्यत अधिक जानेनी अन्तरमां ग्राने हे, के केवी हुनीआमां केऽपि पथ तेनी
होइ नही याके नदि, तेवा वात शास्त्रकार नीचे स्कुट घतावे हे. २.

विचेऽ महात्माण्या ईद्रियु नंहनवन, वज, ईद्रिण्युओ अने विभानाहिक्ने
तुच्छ तेमन् आज्ञाकादीन अने विनाथर समग्र प्रोते ईद्रिनी केम समाधिकृपी नंहन
वनमां, धैर्यकृपा वजने वासन इरने, समताशाची ईद्रिणी साथे आनंद करे हे. तेनु
महा विभान जान हे के भेमां ते निरंतर वास करे हे. बुद्ध्या आभां अही अद्वि-
द्यानी हे? सुन्दा! विचारी लंग. २

विस्तारितक्रियाशान-चर्षण्डत्रां निवारयन् ॥

मोहम्लच्छपदावृष्टि, चक्रवर्तीं न किं मुनिः ॥ ४ ॥

भावार्थ—विशाणुज्जान अने कियाइपी वर्भस्तन अने इन्द्रलत्थी भोदुरुपी खेय्य
लज्जार्थम् करेती मोहम्लच्छिन निवारता मुनिसज्ज चक्रवर्तीनी भरोपरी करे हे. निर्भल
ज्जान दर्शन अने यात्रिकृपी रत्नवर्णीना आराधक मुनिसज्ज केऽपि रीते चक्रवर्तीथी
न्यून तो नवीन, किंतु अधिकन हे. केमके मोहने हडाववानी ताकात चक्रवर्तीमां नथी. ३

विचेऽ चक्रवर्तीन्यारे उत्तर आगुना वज, अंडासाधवा भाटे वैताद्य पर्वती
गुद्धमांथी नीक्काने गाय हे त्यां देहेता खेय्य रान्यन्या प्रोताने आधीन
मेघकुमाराहि हेवानी सज्जायथी जग्नरक्षत मेघवृष्टि करे हे, के केवी ते सहेन तो
गेनी थाय पशु चक्रवर्तीनु आयुः-सन्त्य तेना जग्नप्रवाहुमां ताष्टुर्धु नथ. ते पथते
चक्रवर्ती गालने गोदा शैव रनों अंगीना वर्भस्तने प्रोताना इष्टन-

स्वर्णस्थी विस्तारे के अंदर से गार आर योजनना अर्ह जय है. पहली चर्मरत्न किपर गणा लक्ष्मरत्ने चढ़ाती छपरस्त उपस्थी डांडी है ऐ, केवल अंदर जगनु निहु पशु प्रवेश इसी शक्तु नथी. अनें आदर भविष्यन्तर्थी सर्वव प्रकाश है, धर्मनी निष्पत्ति पशु तान्त्रिक जाय है. आ प्रमाणे रत्नादिकनी अद्वायर्थी तेनु चक्रवर्तीन तर्क है. आ चाचास्त्रां चक्रवर्ती तुव्य मादरायग है, ते पोताना मिश्यात्व विषयउपायकि रेनलाभिवावद आ जगनना सर्व गुरुवाने अनें प्रकाशी विद्यनाव्या करे है. तेनी विद्यनाव्या के के बंदूक रेतव्याती भेवतुष्टिनी उपमाने रथाने के तेना निवारण भाए महात्माव्या किया ने ज्ञानदृप चर्मरत्नने अभ्यन्तरो उपरोग करे है. अथवात् ज्ञानस्थिवावहे ते भिष्यात्वादिकनी विद्यनाव्या नाया करे है अनें ते मिश्यात्वादिकने गणु परास्त करे है. आवी उक्तुष्ट अद्वितीया देवार्थी भद्र चक्रवर्ती तो अ भद्रत्माभिव्या है. ३

नवव्रह्मसुधाकुंड-निष्पुष्टिप्रायको मुनिः ॥

नागलोकेश्वरद् भाति, क्षमां स्वत् प्रयत्नतः ॥ ४ ॥

भावार्थ—अखिनव (गायूर्व-नवनवा) ज्ञानस्तुतना दुंडमां भग्न रही प्रथनथी शुद्ध क्षमा गुणतु भावन उत्तनारा भुनिशक्त पृथीतु भावन उत्तनारा नांगोंदी पेरे शोले है. अरे ! अध्यात्म ज्ञानकृपा अमृतनां दुंडमां मन रही सदृश शान्तिने साक्षात् अनुभवनारा क्षमाअभ्येषु निर्मणा आत्मगुण्यु नांगोंद्र उत्तां पल अधिक शोले है. ४

विव०—‘नागरजननावामां नव अमृतना दुंडा है अनें ते आ पृथीते भावन उत्तर इसी रहेल है. १ अभ अन्य दर्शनीना शायदमां झेले हैं ते गुणादुडा अनें पृथीते धारण इत्वापां भुनिशक्तना कर्ति पशु खेलामां नथी. कारण के गदात्मानी तो नव भ्रात्तना अक्षयर्थदृप गुणादुडना भालेक इ-द्वार्थी है. के के दुंडमां गेंदवी सुधा प्राप्तिनि अदेशर अभर इसी शक्त है. वया ते भद्रत्माव्या शुद्ध अक्षयर्थना पापानादा के अनें अभा शण्हे पृथीते गहवे अदे-अही क्षमा के के केघने निर्भूत उत्तनारी के तेनु भुनि भद्रत्माव्य धारण उरे है. भुनि क्षमावान् अ लेप है, भुनिनु लूपल अ क्षमा है, भुनि क्षमावर्हं अ-प्राप्तय है, अनें तेवी अ ते क्षमावर्यमाय तदेवाय है. आवी रहीं अक्षयर्थदृप गुणादुडना ल्वानी अनें क्षमाने धारण उत्तनारा भुनिन भरा नांगोंद्र है. अन्य नांगोंद्र ते तेवी पासे क्षमी खेलामां गुणु गणी शकाय तेम नथी. ४.

सुनिश्चयात्कलागे, विक्रिप्रभस्थितः ॥

वोभेत विरतिष्ठि-मंत्रार्गीयुहः शिवः ॥ ५ ॥

ज्ञानधार संख विवरण.

६३

भावार्थ— अध्यात्मरूपी केवलसमां विवेकरूपी वृपल उपर आकृद थे लोक मुनि जसि (जान) अने निवृत्ति (वारित-डिया) युक्त होवाथी गंगा अने जौही युक्त शिव-शंकरनी पैदे शोके छे. तत्परथी जेतां अध्यात्म शिरिना उच्च शिखर उपर नृष्ट रहेला अने सद्विनेकदृपी वृपल उपर स्वार थाई समय ज्ञानडियाने समताथी भैबनारा निर्यात्थ अलगारो सहशुब्दामां क्रैंछ रीते शिव-शंकरनी उत्तरा तो नशीन. किंतु अंकान्त युग्मशान्तिना करनारो होवाथी उक्त शंकरनी यदीयाता छे. ५

विव०— अद्वा, विष्णु अने भेदभर अंग अन्य दर्शनीना सुख प्राप्त होये छे तेमने अन्य गतना शास्त्रो अंकडृप यसु कहुँ छे. तेमनी अद्वितु वर्णन तेमना शास्त्रामां के आरोक्तु छे ते अतालीने तेनी साथे भद्रात्माचमानी अभूद्य अद्विने घटावे छे.

अंग वीरुदी पैदी शंकर केवलसमां वसे छे, तेतु^१ वाहन वृपल छे अने तेने गंगा ने जौही (पार्वती) अंग श्वीआ छे. आटवी^२ अद्विवठे ते अद्विमान गण्डाथ छे. भद्रात्माचा आ अद्विने तुच्छ गण्डु छे. तेयो तो अध्यात्मदृप केवल विपर गोचारे छे, विवेकदृप वृपलतु^३ तेमने वाहन छे. अने विश्वि ने जसि (वारित ने जान) वाहना तेमने श्वीआ छे के ते तेमनी साथे अविच्छिन्न रहे छे. पैदी गंगा ने जौही तो परवेइनी साथी थाय तेम नथी पाल आ विश्वि ने जसि तो अपात्माना जागरूक रहेलाएँ।

७ अने अपात्मान गान यसु तेतु उक्त उपर अध्यात्मवाणी आवां अद्विवाणा रहे. असा शंकर तो युनिमद्यासानज छे. ५.

ज्ञानदर्शनचंद्रार्क-नेत्रस्य नरकच्छादः ॥

मुखसागरमग्रस्य, कि न्युनं योगिनो हरः ॥ ६ ॥

भावार्थ— समय ज्ञान अने दर्शनरूपी अंद्र अने सूर्य केवा निर्मण नेत्रो गणा, ^१ नरकने छेहवावाणा अने सुष्णसागरमां शयन ^२ करनारा सुनिराक क्रैंछ रीते हरि (विष्णु) था न्युन नथी. परंतु परमार्थथी जेतां विष्णु^३ करतां पाल वधारे युग-समृद्ध छे. केमंड अवा मुनिशब्द अन-सोइमां प्रश्नमञ्जनित उत्तम सुग्र साक्षात् अनुभवी गांते अक्षय अव्याग्राध सुणिनेन वरं छे. ६

विव०— हरि के विष्णु तेना वे नेत्र सूर्य ने अंद्र छेहवाय छे, वणी हरि नरकसुरो नारा करनारा छेहवाय छे अने ते समुद्रमां शयन करे छे अम तेमना शास्त्रामां छेहेलु छे. सुनिराक आ हड्डीउत्तने निःसार भने छे, तेमज अतिशये किंतु

^१ एक नरकायुने. ^२ अहल समाधिमां औलनारा-भग्न रहेनाना.

इस माने के, ते भावे तेंदा पौत्रेन एवा विष्वुद्यप के अंम अतावी आपे के.
क्षम्भु उे ग्रंद सर्व नेव तर्हके हेय ए अवरमान हे. तेन इयंते महात्मा-
आदि ता ज्ञान ने दर्शनिद्यप के अति निर्भाव नेवा के अने तेंदा नर्ह के.
निनो नर्था इन्द्रेन इन्द्रनारा द्वावावी एवा नर्कनिद्य तेज के. तेना लक्ष्मी धर्म
ए दुर्गितिना लाज्जन थता नथी अने ते महात्माएवा नमाधिद्यप के अविनिधर
नुज तेवी लवधूर चमुदमां अर्थात् सुण्डसमुदमां थयन करे हे, निर्वत्र आविभ
सुखुनेवर अनुभव रहे हे अने तेमान निमास रहे हे. आ प्रमाणेवाद्वावी एवा
विष्व-विष्वाना वारलविद अमृतिवाणा सुनिमाराजनक हे. ६.

या सुष्टिर्वेशणो वाद्या, वाद्यापेशावलंबिनी ॥

मुनेः परानपेशान्त-गुणस्त्रिस्तोऽधिका ॥ ७ ॥

भावार्थ— परस्पृद्यादर्हित यज्ञेन अर्थात् यज्ञाने इन्द्रनारा सुनिराज डेवा
एवा वस्तुओनी अपेक्षावाणी आद्य यज्ञिने इन्द्रनारा आद्या इतां धर्म चिद्याता हे.
निर्वपुरणो अर्थात् यज्ञानेवा प्रगट इन्द्रनारा सुनिनो इपापि सुक्त आद्य स्तुतिनाम
इन्द्रनाम अवधाने अद्युपित्थी इक्षुवी गत्य अंगां आश्रित शु? निर्वाधिक युष-
स्तुतिने इसी-सर्व वी-विस्तारस्वी अन सुनिनुं कर्तव्य हे. ७

विवेत— एवा आ चुष्टिने इन्द्रनारा हे अंम अन्यमतीना शास्त्रेमां क्षेत्रं
... अमने चुष्टि इवामां आद्य वस्तुओनी अपेक्षा रेखेवी हे. गाद्य अहारी रिति-
पात्र ते युग्मी द्वी शक्ता नथी. कै के ए वातन अद्याभाव के, आ सुष्टि तो
चयनादि हे. इततः चिद्र हे, तेनां इतो इर्हि के नर्ह अने छार्ह शेषे पात्र नर्हि;
पर्वतु एव प्रदासनी लेक्षणिने ग्राम्याने ग्राम्यादर ग्रंथ के ए-एवा अहा तो
भूनि महासन्नामा हे के के अतर्गुण चुष्टिने रथे हे. क्रेमां ठिक्यित् पात्र आद्य
पद्मोनी अपेक्षा द्वाता नथी. आ प्रमाणे द्वावावी महात्माएवा अहा इतां धर्म
अपिक हे अथवा ता अद्येष्वा अहा तेज हे के के अविभक्त युष्टिनो आविभ-
वाव करे हे अने नेवाद अवांश्व चिद्रपात्राना अहवीन मेषावे हे. ७.

स्त्रैत्विभिः पवित्रा या, श्रोतोभिरिव जान्हवी ॥

सिद्धयोगस्य साप्यहन्, पद्मी न द्वीयसी ॥ ८ ॥

भावार्थ— क्रेम विवेत्वावी गंगा नही अविव भनाव हे, तंम इन्द्रवर्षीया
... अनुता श्री तीर्थकर्णी पद्मवी पद्म सिद्धयोगी अवा महा सुनिराजने कर्म
... अभिता, क्रेम भन वयन अने इत्याने अद्याद नियममां दाली योगज्ञाधना
... ४ अंका जिद्युयोगी महापुरुषे तीर्थकर्म भद्रासन्नी धर्म अविव पद्मवी
... अभिता, कर्म तुर्मध्य दे.

गान्य महात्माओनुं गोप्य सन्मान.

५१

विवेद- प्रांते कडे के सलवर्णीयी पवित्र अंवी तीर्थकरनी पहवी पलु जेमाणे योग्याने सिद्ध कर्या हो अवा महात्माओने भेषजवी हुर्वल्ल नथी. तेव्हा माणवां छन्दे तो तीर्थकरनी पहवी पर्यु चेत्वी शहे हे. भरतु तेव्हा तेना धृच्छक नथी. तेव्हा तो आत्मिक ऋद्धि प्रगट करवाना धृच्छक हे, कारणुके आत्मिक ऋद्धि तो तेमानी अने तीर्थकर लगवात्तनी अमान हे, आवा ऋद्धिमान तद्वात्त हे. अपरदे तेना तेमानी अपेक्षा-धृच्छा-वांछा होती नथी. अनिच्छक्याप्यु अनु केव लाक महात्माओने ते ऋद्धि प्राप्त थाय हे. ८

आ प्रमाणि महात्माओं सर्व समृद्धि सापक्ष होय हे, तेव्हा उसम दुःखाच्च आव्य ऋद्धिनी अपेक्षा न करतां आ अष्टुभां घातावेली लाव अमृद्धि-आत्मिक ऋद्धि भेषजवानीज धृच्छा अस्वी अने तेने भागेज अद्विनिश्च प्रयत्न दरवेहा. धृत्यक्षम.

मान्य महात्माओनुं गोप्य सन्मान.

(अदम सौजन्य.)

शोजन्यता निपयने अगे आपणे आर विषये. विचारी गया अच्च. ए पैदीना आक निपय इपर आगे विचार करीच्च. आ लुवननो विशिष्ट हेतु सर्वदा ध्यानमां शणवानी आस अउर दे. मनुष्य लुवन अति विशिष्ट होवी सायं अेना हुर्वल्ला सुरा सुझेहा अनेक प्रकारे अतावी गया हे अनुं कारणु अे हे के अ लुवनमां सुकितनां आधनो अहु अशो प्राप्य हे. लुवननो मुण्य हेतु सुख आप्त थाय ते हे, तेव्हा ते विधि प्राप्त करवा माटे सुसुक्ष्मा प्रयत्न होय हे. हेवते प्रयत्न करतां अनेक प्रकारनी उपाधिच्चा आवे हे, मार्गभां प्रत्यवायो नडे हे, अने तेने हर करवामां मदा पुरुषार्थ करवो पडे हे, अवीहपाधिच्चा अने अगं वडेनी सांसे थवा माटे हुद्यापण अहु मळल्युत हेवु "पडे हे अने अनेक शुशु चंपत्तिच्चा शोजना आप्त करवा माटे भेषजवी पडे हे. आण्ही शोज्य दशामा आवे ते माटे तेसु प्रयत्न तो अनाहि काणथी आणेव अधिकार हर करवा दीर्घ प्रयत्न करवो पटे हे अने क्षारे शोज्य आत्मिक अणाने उपयोग करवामां आवे त्यारे तेनामां धीमे धीमे शुशुप्राप्ति थती ज्ञय हे. ते साधारणु रिने मार्गश्रिष्ठ मनुष्यनी रेडे आणो अवणो धुकेवा आप्ते रूपांहतौ होय हे; तेमांशी प्रथम ते मार्गनिःसारी थाय हे अटवे रक्षापर आवे हे अने अही रिने अनेक शुशु आप्त थाय हे. ए मार्गनिःसारीना पांवीश शुशुप्रप्त अनेक जगोच्च विवेचने करवामा

આન્યાં છે; તેણી આપણે એ શુલ્ગાપર વિવેચન કરવા ન રેકાતાં એક બીજું નવીન હકીકત પર વિચાર હરીએ, પરંતુ એ હકીકત પર વિવેચન કરતાં પહેલાં અર્થ કુલાણી હેતું પાસાંનિ જાણું કે આપણું એ નિપાય પર સાંજલ્યને અંગે અથ વિચાર કરીએ છાંચે ને માર્ગાનુસારીતવના જાંગીશ શુલ્ગા પેટિના એક ગુણ હે. એ વિપય ઉપર આગળ વિચાર કરીશું.

આ ઉત્તન અનાહિ મિથ્યાત્માનાં રાચી રહી આત્મભાવનો વિચાર ન કરીનું જરૂરાતમાં જાસાડા અની એક ગતિમાંથી બીજુંમાં અને બીજુંમાં ચીજુંમાં ભ્રમણ કર્યું હોઈ છે. એમ કરતાં કરતાં જ્ઞાને તેના રાસારનો કાંઈ પાર આવતાં હેતું ધ્યાય હોય તો તેના ચાચાર વિપર જાસાડા એણી ધ્યાય છે, તેનું લાવાનિનાંની ઘૂસું હર ધ્યાય હોય અને તેનામાં શુલ્ગાની વૃદ્ધિ થયા થાગે છે. અન્ય અધ્યમ દ્વારામાં વર્તતો હેતુન જ્ઞાને હૃત દ્વારામાં આવે હોય ત્યારે તેને ગુણપ્રાપ્તિ થયા માંડે છે અને પોતાનાનાં પૂર્વી ને પદ્ધત અધ્યમ દ્વારા વર્તતી હતી તેમાંથી તેનું જ્ઞાને થથાની શરૂઆત થયે છે. અનાં જાસારાતમાં પરિચિમાં કરતાં એ સ્થિતિ પૂર્વી હિં પ્રાપ્ત થઈ ન દેખ તેવી અધ્યર્થ આનંદમય વિચિત્ર તેને હવે પ્રાપ્ત થયા માંડે છે અને તેને વર્ધનિને પોતાનાના શુલ્ગા વૃદ્ધિ કરવાના કાર્યમાં પ્રગતિ કરવાના શરૂઆત હોઈ છે. હેતુનાની લખયક્રમાં ભમવાના સ્થિતિનિમાં એ આવે મૌણો કેરસ કુરુ થાય છે તેને ખાડું સંક્રમ રીતે અતિલોકન ચેતય છે અને શિષ્ટ પુરુષો તેને શુલ્ગાપર સારી રીતે નોઈ ગયા હોય અને તેના પરિચામ આપણે માર્ગે નોંધી ગયા હોઈ તે શિષ્ટ પુરુષોના વિચાર અનુસાર આપણે આપ રહેજ નિરીક્ષણ હરી જઈએ.

આ સ્થિતિનિમાં પ્રથમ તો એક જાસ આગાતની વાત આપણને એ પ્રાપ્ત થાય છે કે આત્માને અનાંત જાસારાતમાં પર્યાટણ કર્યો હોય, એના અનેક બેદ વિનિદ્ધ પાદ્યામાં આન્યા હોય અને ને વિપય પરત્વે જાસ ચંચ્ચે વાખનામાં આન્યા હોય. તેમાં વિચિત્ર કર્મોનાં બેદ, સોદનાં બેદ, તેણો ડેવી રીતે આત્મપ્રક્રોચ આવે લાગે છે, ત્યાં જાણ્યા એણી તેનું શું ધ્યાય છે, કેટલો વણત વાગેલાં રહે છે, ક્યારે હૃત્યમાં આવે છે, કેટલા વણત સુધી હૃત્યમાં આવે છે, હૃત્યમાં આવે છે ત્યારે શું ક્ષણ આપે છે, હૃત્યમાં આવતાં પહેલાં સત્તાગત સ્થિતિનિમાં કેટલો રાગત પરદા જોઈ છે, હૃત્ય કેવી કેવી રીતે આવે છે, બાધાયેવ કર્મોનાં મેટા કેરકારો વિનિરે કેવી રીતે થાય હોય-એ વિનિરે અનેક કર્મ રાખાંથી હકીકત ખાડું સંક્રમ રીતે પ્રહર્ષિત કરી તે સાંખ્યનું તત્ત્વ જાન ખાડું સુદર રીતે ખતાલ્યું છે. એ વિપયમાં કર્મની અને આત્માની સંખ્ય કેવી રીતે થાય છે અને આત્મા કર્મની કેવી રીતે આપણી શકી હોય, હર કરી થકે છે, કેવી સ્થિતિનિમાં કર્મનો દાદ થઈની કર્મનું હશ્યું હોઈ છે અને કેવી સ્થિતિનિમાં કર્મપર સાંખ્ય મેળવી તેને દૂર કરી સર્વથા અસ્તિત્વ

थर्तु जय हे—आवा अति अगत्यना विषयने अर्गे आपहे ले लाखवा भारीत्रे
तो भूमा विषय गान्धुरें रही जय अनं प्राचीनिक आणत वर्धी जय तेथी ते विष-
यने द्वाव गान्धु विषय दाणी प्राचीनिक एटलुं ज जग्घावशुं के फ्रेंची आहमा
सांगे अमुक नियमेन गान्धुरीने ज वागे हे अने ते सर्व नियमे अवा एक
सरणा हे के गाने गंधां करी गाणी शक्य तेम हे. आवा सर्व नियमे विशिष्ट
अव्यामां गान्धारामां आत्या हे. ए कर्मीती गरलाव ठाणी प्राणी संसारमां वर्ध-
दण उरे हे, कोईवार सुख मोगवे हे, कोईवार महायातना लोगवे हे; कोईवार
हुक्म अनवे हे, कोईवार हुक्म इडवे हे; कोईवार अंश आराम लोगवे हे,
कोईवार गवुरी करे हे; कोईवार नामन व्यक्ती हे विवाहरनी पटवी धारण
उरे हे अने कोईवार तेना सेवक थाय हे; कोईवार भनुष्य थाय हे अने कोईवार
वार निर्याच गतिमां जय हे; कोईवार एक दिवसमां लागेहा इपिचा
पेहा उरे हे अने कोईवार इतेना वाश शेर वेचाय हे; आवी विचित्र स्थिति
कर्म उत्पत्त उरे हे. अली दीते अनंत संसार परिव्रमण उत्तां करतां आ चेत-
नेना अनंत काण चाढ्यो गयो, अबु अनेक वेशा लज्ज्या, अनेक नाय नायो,
अनेक गतिमां अभ्यु कुर्या, अनेक नामी धारण क्यो, अनेक वर्षत भार आधा,
अनेक वर्षत वास शहन क्यो, अनेक वर्षत भार उपाज्या अने केवी लेवी
इव्यापनाया गुणनी अने हुणनी थर्तु शडे ते सर्व तेणु सहन कुर्या, ते सर्व
तेणु अनुलभ्यु अनं ते सर्व धारी वर्षत गोताना संबंधमां शीधी दीते अने
आडकतरी दीते वेळु. आवी रितिमां एक आदामांथी भीजमां अने भीजमांथी
वीजमां एम उत्तरात रघुपती उत्तां अनेना अनंतो काण गयो, परंतु तेनामां
योग्य विवेचन उत्तवानी अने व्यपद्धने एगाखवानी शक्ति आवी नहि; तेथी ते
कोईपलु अंगांचे रशीर रही शक्ययो नहि, गोतातुं सांख्य समलु शक्ययो नहि
अने सांख्य प्रगा उत्तवानां साधनो मेगाखवा भाटे प्रयत्न करी शक्ययो नहि. न्यां
सांख्य शुं हे तेव अमलय नहि त्यां पाढी तेनी प्राप्तिना साधनो मेगाखवानी तो
संबालवा पाश उद्यांशीक रहू?

आवी दीते संसारमां परिव्रमण उत्तां अनेक प्रकारना वेश डाढां
ल्यावे कांधां साधनुं सामित्र थाय हे; अवस्थिति परिपक्व थाय हे, अने सं-
सार विषय उद्गेव आवे हे त्यार वेनलक्ष्मी उत्कान्ति थाय हे. ए उत्कान्ति पलु
अमुक नियमसरक थाय हे, जे हे तेनी गतिमां धरणे तक्षवत डाय हे; एटले
हे के विशुद्ध आगमाया एकत्रम उत्तिमां आगणा वधवा भाटे हे, तेच्या उत्त-
निना आर्गमा शुद्ध लक्षी प्रयाण्यु उत्तवा वागे हे त्यार उत्तवक भीनी चाले
आवे हे; पहिं सर्वम एक उत्तिमां भागी असं प्रयाण्यु तो अदूर उत्तुक भडे हे;

સામાન્ય નીતે આધુદિગ્માં વર્તના પ્રોલ્લિઓને કોઈ ધર્મ ધર્મ ઉપર રૂચિ થતી નથી અથવા ધાર્ય છે તો તેના દર્શાવાં એન્ને કથા દિલ્હિન્દુથી તે થાત છે, તેમાં ડેટલું જાસત્ય છે અને તેમાં વિશેષતા બું હે-એની સુફર ગાળતનું ગાન તેને થતું નથી. કંતો આંધ જાસત્ય અથવા કુતર્ફ આદમાં આસકત થઈ હોતાની માન્યતાને સત્ય માની તે ગલિન્યેશ કથો કરે છે અને ઘણું ઘરું તો પોતાના ખાપહાદાથી હતી આવેલા ધર્મને સર્વથી હિતામ શમજે છે અથવા ધાર્મિક ખાખતમાં તદ્વન શન્ય રહે છે. આવી સ્થિતિમાંથી યોજ્ય વિચેક પ્રાસ થવાની સ્થિતિમાં આન્યા અગ્રાહ ચેતનનું અહુ પ્રયાણ કરવું પડે છે, ગિયા જાન-માંથી સુભય હોખની સ્થિતિમાં આવતા પંડુતાં અહુ મેઠે પ્રયાસ કરવો પડે છે અને તે સ્થિતિ પ્રાસ થાય તે અનિ અગન્યની હોવાથી તેને અંગે આર્હી પણ્ણે વિચાર કરવાનો છે.

જ્યારે સાધનું જામીય થાય એટલે કે મોદ્દ તરફ પ્રયાણ થાય ત્યારે આ સ્થિતિ પ્રાણ થાય છે. કંત પરિલાપામાં બોલીએ તો હેઠલા પુદ્ગળા પરા-વર્તનમાં આ ચેતન જાયની ગમીય અથવા તેની નજીક આવે છે. તે વર્ણત તેને ને સ્થિતિ પ્રાણ થાય કે તેપર આપણા પ્રનૃતુલ વિષાને આપ રાંધા હોવાથી આપણે તે સંબંધી અત્ર વિચાર ફરીએ. અહીં જ્યારે આણી આવે છે એટલે કે એને જ્યારે સાધનું સાચીય પ્રાસ થાય છે ત્યારે તેને વિચાર થાય છે કે હું કે ધન, જી, પુત્ર, કીર્તિ નિગેરે માટે પ્રયાસ કરું હું તેને અને ગારે ચાંધ કેટલો છે, કેવો છે, શામાટે છે અને કથાં સુધી ચાલે તેવો છે? એ પ્રમાણે વિચાર ફરીનાં ફરીનાં તેને જાણાય છે કે એને અત્યાર સુધી ને સ્થિતિમાં તન્મય થઈ આનંદ માનતો હતો તેમાં તે મોદી ભૂત ફરીનો હતો, કારણ કે વસ્તુતઃ આનંદ કેવો હોવો જેખાં તેનો પોતાને ઘાલ ન હોવાથી તે શ્વાસ ચાનંદમાં તુસ થઈ જતો હતો. એવા વિચારને પરિણામે તેના હૃદયમાં કંઈક આત્મિક અને પાદગલિક પદાર્થ વન્દનાં લોક પડે છે, એ કે એ જ્ઞાન તેને અહુ ઉપર ઉપરનું થાય છે તો પણ વિશાળ હોથાની વાનકી તેને અહીં પ્રાસ થાય છે અને સાધનું જે કે તેને દર્શન થતું નથી પણ ઉડાણમાં તેની વાસના ઉપર થાય છે; તેથી તેના તરફ આકર્ષણી થાય છે અને તે તરફ તેની વૃત્તિ હોયાય છે. એ સર્વતે પરિણામે તેને સાંસાર ઉપર ઉદ્દેગ આવે છે, તેના ઉપર એક પ્રકારનો તિસ્કાર હુઠે છે અથવા બાસાર કદ્દાએ તો તેના ઉપર તેને અરૂચિ થાય છે. એમ માંદા જાણસુને કે લોકનું હુમેશાં અહુ પ્રિય લાગતું હતું તેના તરફ માદ્વાદ વૃણતે મજબૂર નાણતાનું ઉક્કી આવે છે, પોચીટ થાય છે અને તેના ઉપર અરૂચિ થાય છે તેવા મજારની કંઈક તેની મંગલાલના સંસાર તરફ થાય છે અને તેને

માનવ મહાત્માનાનું પોત્ય સન્માન.

૧૭૬

એમ લાગવા માંદે છે કે અત્યાર સુધીની તેની પ્રવૃત્તિ હતી તે સર્વ એડે રહેતે હોરતી હતી, ફરજાવનારી હતી, અતિ હુંણ ઉપજલવનારી હતી. અત્યાર સુધીની તે જેમાં આનંદ માનતો હતો તેમાં આનંદ કાંઈ હતોઝ નહિ. આનંદનો તેનો જ્યાલજ ગોડો હતો-વિગેર વિગેર વિચારો કાંઈક વ્યક્ત લાયે અને કાંઈક અન્યક્ત લાયે તેને આવવા માંદે છે ત્યારે તે તદ્દન ઓઘદાટિમાંથી નીકળી ઉત્ત્રતિકમમાં આગળ પ્રયાણ કરે છે અને તે વળતે તેની લવસ્થિતિ પરિપદવ થયેલી હોવાશી તેને પ્રથમ દ્વારા પ્રાપ્ત થાય છે. એ પ્રથમની યોગ દર્શિતું નામ મિત્રા દર્શિ હોવામાં આવ્યું છે. એ દ્વારિમાં વર્તતા પ્રાણીને દ્વંદ્ય અભિયાદ કરવા રૂપી થાય છે એરે અભ્યગ ગોપ થયા પછી ને વસ્તુ વંશવાળાની પછી ત્યાંગ થાય તોંબો ત્યાગતો તેને અહીં થતો નથી, પણ ખાદ્ય દર્શિયા કેરલાક નિયમો તે કે છે અને તેને પાળવા અને તેને અનુસરવા મનમાં નિર્ણય કરે છે. અહીં એને નાત્તવસ્થાય પણ થાય છે પણ તે બહુ સ્ફુરત થતો નથી. એમ તુણનો અભિન થયો હોય અને તે વૈદા વખતમાં નહિબત્ત થઈ જય છે તે પ્રમાણે ગોધનો અહીં જામાન્ય જાગરારો અદ્દ જાય છે. આ સ્થિતિ પ્રાપ્ત થયા પછી પ્રથમ દ્વારિમાં ને આચ અગ્નયની બાણણ અને છે તે એ છે કે તેને અહીં અંદેપ શુદ્ધસ્થયન આપ થાય છે. એને પરિણામે એ અન્ય દર્શનન કે સંપ્રદાય ઉપર દ્રેષ દોડી હે છે અને તેના અનુયાયીઓએ તરફ વૈરલાવનો ત્યાગ કરી હે છે. તે અન્યમત સ્વી-પદસ્તા નથી. પણ તે મળ કયા દર્શિ ગિન-હુદ્દી સત્યનો અંશ અહીં કરી નીકળ્યો હોય તે અમન્દવા થતન કરે છે અથવા શિષ્ટ પુરુષો તે સંખ્યાદમાં ને કહે તે વિચાર કરી સ્વીકારે છે. પરમત સહિત્યાતું તેનામાં એટલી સંજાર અંદી જાય છે કે તે કોઈના ઉપર ક્રેપ લાવતો નથી. હિન્હુસ્તાનનો ધર્તિહાસ તપાસતાં ધર્મને નામે કેરવી લાણીની નહીંએ. ચાલી છે અને રવભત રથાપન માટે પ્રયત્ન કરતાં આપા દેશની કેવી છિન્નભિન્ન સ્થિતિ થઈ ગઈ છે તેપર વિચાર કરતાં હેઠાની પરતાત્તવાનું પ્રથમ બીજ આપણું સહજ સમજવા સાથે મનમાં મોટો ગઈ કરતાં છે. ભગવાતના શાસનમાં વર્તવાના માર્ગિપર આવતાં હજુ તદ્દન પ્રથત સ્થિતિમાં રહેલ પ્રાણીમાં પણ ધર્મત શહિત્યાતુનો શુણું એરેલો આવી જય છે કે કન કામના અંબંધમાં જન્મારે એવો આધારભૂત ધર્તિહાસ લગદો થારે તેમાં આવા પ્રસાગ આવવાનો સંસાર રહેશે નહિ એમ ધારી શકાય. અજ આગેવાનો અને ધર્મતું રદ્દ્ય ન સમજનાર પદિતમન્ય શુદ્ધસ્થાયે પ્રતાપી ધર્મની દ્રાગામાં રહી કાઈ કેદવાર ઓ પ્રથમ દ્વારિમાં રહેલા સાધારણ શુદ્ધનો ડુંદંડ કરવા એવું પગણું ભર્યું હોય તો તે અતિ જોતાસ્પદ હોય. પણ એમ માત્રામાં બૂડું જાગુની નથી કે એવી સ્થિતિ થઈ હોય તો પણ આ હર્ષનામાં

गहु अद्य इष्टे. ए विषय हाल आनुपर राणी आ दृष्टिमां वर्तीता उत्तम स्थि-
तिमां आगणा प्रयाणु इनार इवना लक्षणु विचारां अंभ ज्ञाप्तिं के रोगनुं
अथम अंग यम अही प्राप्त थाय के. एवं प्राणानिपातनो त्याग (अदिसा),
सत्य, असत्य, मधुन विरमम् अने अपरिहरता आ यांच यमो अमुक ओड
अंग अही प्राप्त थाय के. तेना अही आहर थाय ते दृश्य आलिखडूपे उपर
ज्ञानाल्पुं तेम समर्थ्यो. निशेष विश्विकृपे त्याग ते आगणा उत्तमि कुम्भां अ-
थम दृष्टिकृपे रवानो के. ए उपरोक्त आ दृष्टिमां गहु उत्तम अर्थों अनन्तने
प्राप्त थाय के अने कंभ यति विश्वी श्री यतिनि भगवानी शद्य त्वुं अथवा
योगेर पक्षी यादृ उद्धवनी शद्य त्वुं तेग आ प्राणी उत्तम निमित्ता प्राप्त इ-
वानी शद्य त्वुं के अने व्यापे कुटुंब गुण चांचे अथवा गुणवान् चांचे प्रवाग
पउवानुं असंख अनी आवे त्यारे ते निमित्तांतो ते गहु यारी शिंते उपयोग
करी तेना पूरती शिंते वाल वे के, वणी तेना आत्मानी अथवा वास्तवीक इक्षीके
ते तेनी आनुभानुनी इवा एलु अंटवी तुधरी गयेकी रुहु के के तेने साधारण
इतिन उत्तम निमित्तानो संयोग थाय के. आ अंट जापारण नियम के के
अमुक वस्तुनी दृढ आस्थाच्छ इच्छा इवामां आवे के तो ते व्युद्ध प्राप्त थाय
के. ए रुधा वस्तुमेनी इच्छा अति गीवतश्च इवामां आवे के तो ते एलु
गणी आवे के अने ल्लारे अनन्ते उड़ानि इवामी इच्छा थाय के त्यारे तेने
तेवा संयोगो सद्व प्राप्त धर्म आवे के. गाड़ी जावना ताढ़ी सिद्धि: अंभ
के दोङाळिं के ते कुटुंबीक वापत ग्रामार यथास्थित शिंते ग्रामप्रेषती आवें.
त्यारे प्राणीने पातानी उत्तमि इवानो विचार थाय के त्यारे तेने तपायेव्य
आधनो मणी आवे के अने तेने प्राप्त इर्नि ते उत्तमि कुम्भां आगणा वघेतो
नव के. अही प्रथम दृष्टिमां ते के गीवत गुणं प्राप्त इर्ने के तेनी संयोग
मे योग्य पुरुषने योग्य मान आपवानो गुणं प्राप्त करें. तेना यांग घमां विभान्नां
श्रीमद्योगिविज्ञय विचारायतु लांग के ...

योगनां योग इलां थें, जिनवर शुद्ध प्राणामोऽ:

वापाचार्ज येवना, लप उद्ग्रह शुद्धामोऽ: वारक्षिनेश्वर हेशना.

मतवत्तण अही योगनां योग अद्य इर्ने के अने गरेखरा आगमनिर्दित
शिंते प्रवृत्ति इनार आचार्यनी सेवना-पर्युपासना करे के अने सांसार उपर
उद्देश लावे के. आ प्रमाणें सूर्य थाय के तेनुं क्रश्यु ए ए के अही योगनां
ज्ञानान् प्राणी धारणु करे के अने तेमांशी तेना आगणामां लविष्यमां एवी केवी
तेनी उड़ानि यती व्याप के तेम तेम ए योगनो विकास थेतो नव के. योग,
कुम्हा अने दृश्य ए नांगुने अही गहु अवंगव्याप माप थाय के, तेनी ते गोताना

માન્ય મહાત્માચોદું, ગેણ્ય જનમાન.

૧૬

આત્માને છેઠસોની નથી અને વસ્તુઃ સત્ય માનીને-સમજુને, આત્મોપત્તિ માટે કિયા કરે છે, યોગયતૃતી રૂપણ રીતે શુદ્ધ માર્ગ કરે છે અને તેથી તેના કળમાં પણ કંઈતાં નથી. આ પણ અવાચક લાખ (યોગાવાચક, હિયાવાચક અને કળાવાચક) અહીં પ્રાપ્ત થાય છે તેના તેના નિમિત્તા અને ચંચોળા સુધરી લય છે અને તે રૂપને બશણર માર્ગ રૂપર મૂડી હે. અને માર્ગ એટલો પણ સુધરી લય છે કે તે રૂપને અત્યારસુધી વિપ્યય કર્યામાં અનાંદ માનતો હોતો, રજકથા, દેશભૂષણિક વિકાયામાં રૂપ કેતો હોતો તેને ખફે હુએ તેને બીજકથામાં રૂપ આવે છે. સાથ્ય શું છે? માં છે? કેમ મળે? વિગેર વિગેર વાતો કર્યામાં, રસાનાં રૂપર સમજવાળાં અને લભનું વિસ્તારાંનું વિચારવાની વાતોમાં તેને રૂપ આવે છે. આ હજા પ્રથમ દૃષ્ટિમાં વર્તતા પ્રાણીને પ્રાપ્ત થાય છે.

અહીં આપણે પ્રસ્તુત વિપ્યય વિચારાનાં એક એ. વાત કરી નામીએ. ચમકિત પાંચમી દૃષ્ટિને નિયમાથાય છે. કેંચા એમ માની બેદા હુાય કે અમારામાં સમ્યક્તય છે તેમણે આ પ્રથમ દૃષ્ટિમાં કોહ્લા શુણે પોતામાં છે. કે તન્દુ તેનો વિચાર કરી લેવો. રામ્યકલન જે યોગમાં મદા ઉચ્ચ ફથા ખતાયે છે તે આધારણું શુણ નથી. અની પ્રતિ એક ગઢ કે એમ માની લક્ષ દંગધા વગરનું વર્તન વલાવવું એ તો એક પ્રકારની પૂછતાજ છે. પ્રથમ દૃષ્ટિનું રૂપર વિચારનાં, જણાગે કે અમકિત તો શું પણ પ્રથમ દૃષ્ટિમાં આવવાની વાતના પણ બહુ પ્રાણીએ માટે વાંધા છે. એણું વાત એ કે આ દૃષ્ટિમાં માન્ય પુરુષોને માન આપવું કે શુણું પ્રાપ્ત થાય કે અને તેથી દૂષિતિકગમાં જે અતિ અગત્યના શુણું પ્રાપ્ત કરવાના જે તેની શરૂઆતમાં આ શુણું પ્રાપ્ત થાય છે એ વાત મનમાં વિચારવાની છે. એક વાત કરી આપણે મૂળ વિપ્યય રૂપર આવી જઈએ. એમ એમ દૃષ્ટિમાં આગળ વધાડો થતો લય કે તેમ તેમ તેનામાં અનેક શુલ્લાની નિષ્પત્તિ થતી લય છે, તે શુદ્ધથાનમાં આગળ વધતો લય છે, યોગની નિર્મણતા થતી લય કે અને આધ્યની નંદક વધતો લય છે. આંશે એટલું પણ યાદ રાખવાનું છે કે પ્રાપ્ત થયેલા જુણું દૂષિતિકગમાં આગળ વધતાં વિકાસ પામે છે, આંશે થતા નથી અને જે દૂષિતિકગમાં આગળ વધતાં પ્રાણીમાં નીચેના શુણું વિકલ્યાના ગર્ભે, ન જગ્યા તો તે આગળ વધેલ નથી એમ સમગ્રનું.

આપણે ઉપર જેઈ ગયા જીવે કે વાતીલિને થાચ્ય માન આપવું એ માણિનુસારને એક શુણ છે. કેંચા માર્ગ પર ચી ગયા હુાય, મોકાનું પ્રયાલું આહદી બેદા હુાય અને રાજમાર્ગ ચાલતા હુાય તેનામાં કંટસાડ શુણું હુાય છે એમ તેચેને મોકાને રામજાયા માટે શાખકાર કરે છે. અનામાં પાંચિશ શુણું પ્રાત્મકર ગનાવાય છે તે ગાંગતાણી જાણુણે કે વયવહારકુશળ, સફરુદ્વિવાનું

अने नीतिने मार्ग चालनारा सद्गुणी प्राप्तिमां के लक्षणों आपसे विचारी शक्तिये ते तेमां आपवामां आन्वा हे. अे मार्गीनुसारीना लक्षणे येदी डेटवाक व्यवदाहे हे, केटवाक नीतिना नियमने लगता हे अने डेटवाक अमुक जमानाने अगे विशेष गच्छाता शुल नियमो हे. अे नियमो वांचताथी शास्त्रकार आ प्राणीना संह चांगाम अने व्यवहारनी आगतमां भए, केटली चीवर्ती ध्यान आपे हे अे व्याप्ति आये हे. अे मार्गीनुसारी प्राणी ते प्रथमनी वार दृष्टिमां आप्ती व्यती विक्ष्वरता प्रभेता प्राणी समजवे. नीतिना नियमं पाणानार, आ जवमां चर्चा सुण भेणे हे अम अमुक अंत्री न रहेनार अने आमिद उन्नति इत्यानी धर्मात्मापा प्राणी नदीनेने मार्ग गृहीते शान्त्यमार्ग पर आवी व्य ते अने शान्त्य तरह प्रयाणु दरे हे. अमुक देश तरह मुसाफिरी इत्यानार प्राणी रहते सुंदर हे, परं सवार पठाना पाठी गोतानी सुगाहरी आगणा चलावे हे; अंग मार्गीनुसारी हशामां आन्वा एवी प्राणी भाष्ट तरह वर्तथा निवृति भाव गोताना मार्गे प्रयाण चालु राखेहे अने वन्ने हेवजति आमिदमां सुभ गोताना शारू व्य हे. तेन दानि शथन चावे रहेगावीक्ष तो वणी मनुष्य गति दृप प्रबालनी प्रसिद्धानां प्रयाण आगण चलावे हे. आवी रीते विक्ष्वरता प्राप्त इत्यो इत्यो प्राणी अनेक गुणांता विकास करे हे अने आगण व्यतो व्य हे.

अे मार्गीनुसारीना गुणां येदी वीशमा युष 'विनय' हे, अना साधन-प्रभमां विवेचन इत्यां अंड विद्वान लगे हे के के खालाथी गुणु, पहवीच्ये अथवा गोच केही रीते भावा छाय तेना योग्य विनय इत्यो. त्यारे अहंक प्रश्न उद्भवे हे के विनयनी अद्विद्यात शी? अने तेम अखाथी लाल डेवा प्रकारों अने शा मार्गे थाय? आ अंड सहज उत्पत्त थाय तेवा प्रश्न हे, तेनो उत्तर आपेक्ष विचारांय. शुलु प्रसिद्ध जेने शान्त्य छाय अटले जे प्राणीनी धृत्या गुणां प्राप्त इत्यानी छाय तेवे गुणतं अने गुणवानने आगणवा ज्ञेयांय. शुलु अंगी वक्तु नथी के ते छाथमां आवे. तेथी प्रथम गुणवान सावे आवी रीते परिचय इती तेब्बोमां इया गुणां हे अने ते पाते डेवी रीते भाजी शोङ्क अथवा ने खालाने प्राप्तन्य हे के नर्दि तेना विचार इत्यो ज्ञेयांय. शुलुने आगणवानो अने तेनी डिंभत चमजवानो जला मार्ग अंज ते के गुणवान प्राणी सावे परिचय इत्यो. इये आधाराय परिचयार्थी गुणवानमां शु' मादता हे ते समन्वती नथी. आन्वा ज्ञां दस्त गणावार्थी के तेनी चावे इपर इपरनी वालाची इत्यार्थी गुणानु लान थतु' नथी. तेने भावे तेना विशेष परिचय इत्योना ज्ञाने परे हे. परिचय इती अद्याय अनुभवरु थाय त्यारेन गुणनी भईता प्राप्त थाय हे ते तेनी आवाज आवे हे. अंड साई गुणपां इमा शुलु आगूर्व छाय ते तेनी

શાશ્વત પરિચયમાં જ્ઞાતવાથીજ સમજનય, કારણુકે જ્ઞાધારણ રીતે તો હરેક પ્રાણી ક્ષમા રાખેજ છે, પરંતુ હોથ કરવાને જ્ઞાસ પ્રસંગ આવે તે વગતે પણ તેની સુઅસુદ્રામાં વિકાર પણ ન થાય ત્યારે તેનામાં ક્ષમા ગુણુ કેટલો છે તેનો જ્ઞાદ આવે છે. વળી પરિચય કરવાથી કેટલાક શુણુવાન હોવાનો દાલ રાખતા હોય છે તેની પણ પરીક્ષા થઈ જાય છે. આપણે અત્ર ને પરિચય કરવાની વાત ડરીએ છીએ તે હાંલિક માળાસેન શોધવા માટે નથી, આપણા આશય તો શુણુવાનમાં ગુણુ કેટલા છે અને તે ક્યારે, કેવી રીતે અંવિભાવ પામે છે તે જેઈ તેવા ગુણ આપણામાં પ્રાહુદીન પમાહવાના માર્ગદર્શક તરીકેજ તેનો ઉપરોગ કરવાનો છે; હાંલિક હોય તેનો પરિચય મૂકી હેવો. એવા દાલનું કૃળ તેને મળશે. આપા હાંલિકને શોધવા માટે આપણે કેઈ શુણુવાનનો પરિચય કરતા નથી; પરંતુ પરિચયને આજે દાલનું પણ જાન થઈ જાય છે કે એ એક અકસ્માતિક કૃળ છે.

આ તો ગુણુવાનના પરિચયની શુણુની શોધ માટે એક સાધારણ વાત થઈ. હોય જાયારે એવા ગુણવાનનો પ્રસંગ પણ ત્યારે તેનો ચોણ્ય વિનય કરવો સુફ્ફા છે. જાધારણ શુણુવાન હોય તો જ્ઞાનેણુ કરીને, તેથી વિશેષ પ્રલ્લાદ, નમન, વંદન આદી ચોણ્ય રીતે તેનો સત્કાર કરવો-તેનું ખાડુ માન કરવું એ શુણુની કિંમત કરવા પરાયાર છે. જ્ઞાદા જ્ઞાદા હેઠામાં અને જ્ઞાદા જ્ઞાદા સમયમાં સન્માન કરવાની રીતિમાં કેર પડે છે. આપણા હેશ અને સમયાનુસાર શિષ્ટાચાર અમારે પણ્ણિસર માન આપવાની ને પદ્ધતિ હોય તે પ્રમાણે ચોણ્ય પુરૂષની લાયકાત અનુસાર માન આપવું તે શુણુની ખૂબ કરવા જેવું છે, શુણુની આપણા મનમાં કિંમત છે એમ ખાતાવવા જેવું છે અને તેદ્વારા શુણુ પરાયાર સારી રીતે પ્રાપ્ત થાય છે એમ અન્યને પણ જ્ઞાતવા જેવું છે. શુણુના સંખ્યાંમાં આ એક અતિ મહત્વની વાત છે કે જે શુણુ પ્રાપ્ત કરવા ઈચ્છા હોય તે શુણુ તેણે પ્રથમ સમજવો જોઈએ, તે માટે હરેક શુણુવાનને માન આપવું જોઈએ અને તેની પાસેથી શુણુને શોધી કાઢવા જોઈએ એ તેનો માર્ગ છે. વિનય શુણુથી રાણ થઈને શુણુવાન પ્રાણીએ અનેક માર્ગો અતાવે છે અને તેથી વિનય કરનારનું લખું થાય છે. શુણુવાન માર્ગદર્શક તરીકે પ્રવૃત્તિ કરે છે તે કાંઈ પ્રલ્લાદ ને વંદનથી કરે છે એમ સમજવું નહિ. કેમકે પરોપ્કાર કરવો એ તો શુણુવાનનો અદ્દજ ધર્મ છે, પરંતુ જેને શુણુ સમજનવા છે તેનામાં તે જીવવાની શક્તિ છે કે નહિ તેની તુલના કરીને સર્જનનો શુણુ સંખ્યાધી વાતો કરે છે અને માર્ગો બાળવે છે. તેથી પેતાની લાયકાત ખાતાવી તહેદ્વારા શુણુ પ્રાપ્તિના માર્ગો શોધી કાઢવાના હશ્ચ જ્ઞાધન માટે પણ વિનય શુણુ ખાડુ ઉપરોગી છે.

જેને શુણુપ્રાપ્તિ ઉપર પ્રેમ થયો હોય છે તેને શુણુ ઉપર એવી ગ્રીતિ લાગી જાય છે કે તે શુણુને દેખો છે ત્યા ગાડો થઈ જાય છે, તેના પર વર્તી

वयं के, तेना संबोधमां आवनारं पोताणी वानि धन्य मानं के. अने शुद्ध दृपरं शेषो चालकितं प्रेम आती वयं के के एं शुद्धवान्तुं नाम संबोधतां. अना गर्जे पर चासो व्यादेयो वयं के, ऐसी शुद्धवानं पर दृष्टि पड़तां एं अनाः प्रस्तुशी रात्रु रात्रु अर्थवयं के अने पोताणी आस वद्वल वस्तुतो संवेदा पोताने थेयो छे अभे ते माने के. शुद्धवानं उपरं प्रेम भाववेयो एं तेने भन एट्टुं कुटस्ती वाणे के के ते वगर ते श्वी शक्तो नथी. सहशुद्धाणी भुज कर्ती; तेने समझवा, तेने आलाणवा, ते जेनामां द्वाय तेने खडु मान आपवुं, तेनुं वेत्य आहरतिथ्य कर्वुं एं शुद्धवापि भाटे जाग आवश्यक के अने जेने अलापुं गर्जे प्रथालुं कर्ती चालय प्राप्त इवाणी धन्याणा द्वाय के ते शुद्ध तरइ अटदेयो थेयो आकार्ती वयं के के ते साधारण रीते क अन्यना उपदेश वगर शुद्धवानं खडु चारी रीते चन्माने के, गूरे के, लेटे के अने तेनी भेवा उडावे के. शुद्धवानं आप्ती तेने डाई दुक्म इरे तो ते तेबुं पोताणी उपर दृष्टा करी के अभे गल्ली ते दुक्म अमदमां भूक्ता भाटे पोताणी अन्तुं इरे के अने अभे अनेक रीते पोताणी शुद्ध अप्त गूर्ह अुद्ध व्यक्ता करे के.

के आस दृष्टीने मान्य मुद्दों ढाय, केने भाटे दोडामां चान्मान लुद्धि घल्ली ढाय अने जेनुं शुद्धवानभ्युं सर्वत्र इमुखायदुं अथवा स्त्रीकारायदुं ढाय केने मान आपवानी तो आस जड़र के. तेना शुद्धोनो विद्यय कर्वानो अवकाश रहेनो नथी, परं तेज्मा अमुक एवं परं के तेनी ते यहने अंगेष्ठ तेने मान आपवुं ज्ञेध्येम. द्वाषदा तरीके आजेवानो अथवा साधुओने के आपवानी तेज्मा नामा यह प्रमाणे मान आपवुं एं एं पहमां रहेला शुद्धने मान आपवानी विद्यार छे. डेट्वीक वार आधुओनी अमुक व्यक्तिओमां डेट्वीक गर्तपट विजेदे ज्ञेध्येम आप्ता साधुवर्ग उपर अथवा साधुधर्म उपर द्वय आती वयं के. अभे एने अनुं ढाय तेबुं आस विचारवानुं के के अमुक व्यक्तिना होयोने विचारी के आणा भार्ग पर अदृचि लाल आवे तो के उभतिकम आपेणु प्रथम विचारेणो के तेमां गोठो. प्रस्तवाय आवी परे, उभति अटडी परे अने पोतानो अध्यात्म धाय. द्वारकुडे प्रगति कर्वा भाटे चाधुमार्ग तो छारी शक्य तेम छेज नहि, भतवत्य एं भार्ग प्रथालुमां जड़र आवे छेज; तेथी आ वाल एमेठ आस ध्यानमां रामवानी के के अक्षिगत दोसोने अंगे आणी अमुक उपर उपेक्षालाव रामेणो नहि. अभे कर्वाथी अन्यने छानि थती नथी, परं पोताणी प्रगति खडु अटडी परे के अने डेट्वीक वार प्रगति थवाना भार्गभी एट्टुं अप्त थर्थ अवाय के के एं भार्ग पर आवता फडेवां ध्येया लांभेया वामप नीठपीयी वय.

शुद्धवानने शुद्ध गाटे मान आपवुं, मान्य मुद्दोने तेज्माना यहने अंगे

યોજ્ય ગાન આપણાની આસ જરૂર સુજ મનુષ્યોએ વારંવાર બતાવી છે. શિષ્યે શુદ્ધનો યોજ્ય વિનય કરવો, એમ થાકૃકાર વારંવાર કહે છે તે શિષ્યના હિત ખાતર છે. શુદ્ધને શિષ્ય નાં એ કે નહિ તેની દરકાર હોતી નથી અથવા હોણી પણ ન જોઈએ, પરંતુ શિષ્યના દૃષ્ટિભંડથી એ વાત ઘણી અગત્યની એ અને તેટલાજ માટે તે સંગ્રહી વારંવાર ભાવાગણ્ય કરવામાં આવી છે. આ વિનયગુણું કેટલો હૃપ્યોગી છે તે ચંડડુર આચાર્યના દૃષ્ટાન્તથી બાળજર જખાય છે. નવપરશિવ ણાળાઠને દિક્ષા આપી રાતોરાત વિહાર કરનાર તે શુદ્ધમહારાજને અગવડ ન પડે ને સારુ ગોતાના કંધ ઉપર ગોસાડાનાર શિષ્ય એજ રાનીએ રસ્તે ચાલતાં કેવિદ્યગાન પાસ કરે એ વિનય શુણ્યાની પરાક્રાણ બાણીએ છે અને એ વાત એમ પણ બાણી આપે કંઈ કે એક ગુલનું યોજ્ય રીતે આરેનન કર્યું હુણ્ય તો તેથી મહા લાલ થાય છે અને તે લાલ બેટલો બેંબો થાય છે કે લગભગ સાધ્યની પાસે પહોંચી શકાય છે. આવી રીતે એક વિનયગુણુંએ પ્રથમ દૃષ્ટિમાંથી આગળ વધેલો પ્રાણી ઉભાત હશામાં મેંક આહારી દૃષ્ટિની લહ સુધી પહોંચી જઈ, સર્વ વસ્તુ હેઠળી શકે એવી કેવલા લક્ષ્મી પ્રાસ કરે છે. એવી વધારે આ શુદ્ધ સંબંધી શું કહી શકાય? અનેક શાંત્રો, જિયો આ શુદ્ધથી મહા વિદ્યાએ પામ્યા છે, કેટલાક તેનાથી મંત્રપ્રચોગ સાધી પ્રથમ શક્તિએ પણ પ્રાસ કરી શક્યા છે-એવાં એવાં અનેક દૃષ્ટાન્તો એજ બાણીએ છે કે શુદ્ધવાનનો વિનય કરવો ને શુદ્ધને પોતામાં પ્રગટ કરવાનું પ્રથમ સાધન છે અને એમ કરનાર ધાર્ષા સંજ્ઞનો તેથી પોતાની જાતને અને ધીજન અનેકને લાલપરંપરા કરી ગયા છે. કે એવો શુદ્ધનું લહુ માન કરતાં આ પ્રાણીને નુદ્દે તેઓને પણ તેથી શુદ્ધ ઉપર રાગ થાય છે અને તેઓ શુદ્ધની કિમત સુભજના લય છે તેથી સર્વને લહુ લાલ થાય છે અને શુદ્ધનું સૈવ વૃદ્ધિ ગામતાં ને પોતાના આંશ નિભાગમાં અનેક નાના શુદ્ધને લાવી તેના માલેકને અનેક નાના મોદા શુદ્ધથી સંમુજ્જ્ઞ કરી મૂકે છે, તેનો વિકાસ વધારી તેને ઉભનિહિમ આગળ ગૂંઝે છે અને તેના ધીમે ધીમે મોક્ષ તરફ પ્રગતિ થતી જાય છે. આવા અન્તિ સામાન્ય લાગતા પણ લહુ લાલ આપી શકે તેવા સદગુણુની પ્રાસ કરી સંજ્ઞનની પંક્તિમાં આવતા પ્રયત્ન દૃષ્ટાંધી સર્વ પ્રકારે લહુ લાલની પરંપરા પ્રાસ થાય છે.

માન્ય શુદ્ધેને માન કેવી રીતે આપવું તે સંબંધમાં વિનયગુણને અંગે શ્રીમદ્યશોનિજ્યાળુ ઉપાધ્યાયે એક આપી બનીશી લખી છે. (નુદ્દો ડાનિંશાદ્વા-લિંશિદા-રહમી લંગીરાણી) એવાં વિનયના અનેક પ્રકાર પર અતિ વિદ્યતાથી ચર્ચી ચલાવી છે. એ ઉપરાંત બારમી બનીશીમાં ચેગપ્રાસિ પહેલા શું શું કરવું જોઈએ તે બનાવવા ગાડે પૂર્વસેવા બાણીએ છે ત્યાં પણ ‘શુરુહેવાનિ પૂજન’ ને પ્રથમ પંક્તિ આપી છે અને શુરુ શાખણની લયાખા કરવા તેમાં માત્રા, પ્રિત્ય, કણા-

आर्य, जयोतिरुद्ध अने धर्मोपदेश करनार विग्रहेनो समावेश करी आ मात्य सुरु
पोने भान आपवाना विषयनी अगत्यता णाहु चुंहर दांते णतावी आपी हे.
योग्रामसिने अंगे चार भाषण (गुड्हेव गूळन, भहाचार, तप अने मुक्तिपर अद्वय) मां
आ विनयशुभुने अंग गुड्हे हे ए णाहु सूक्ष्महृषिथी विचार करवा येण्य हे. आ
अगत्यता विषय पर खास लक्ष्य आपवानी जडुर से अटलुं सूचन करी, चौकन्यने
अंगे तेनी अगत्यता णतावी, ए युखु प्रास करीने शुभानी अने शुभानी ठिंगव
करी, येते युखु अरब्ध करवा, धारब्ध करवा अने तेमां प्रगति करवा येण्यता
णतावी, सज्जन लक्ष्य धारब्ध करी तं अविधानने येण्य थवुं ए हर्तव्य हे.
शुभनसाक्ष्य हे, सन्गार्ण साक्ष्यमासि तरक्त अयाख्यायक हे गोम णताववानो
द्विद्या मार्गहर्थन तरीके साध्य करी अव विरगीय. विशेष विचार सुन्न प्राप्ती
मेअंगे करवा आवश्यक हे. **कापडीया भोतीचांह गीरधरलाल.**

॥. ए. एव. अंग. ॥. ए. भोतीभीट.

साधुने एकला न रहेवा विषे.*

(दास परे द्या लायी हे, द्याय देवा दास परे द्या लातो — अंग राण)

ऐकला नवी रहेवुं हे; मुनिवरेने ऐकला नवी रहेवुं.
सधवा ने विधवा नारी, कुवारा ने कामचुगारी;
मारे नयन फटारी फटारी फटारी हे; मुनिवरेने० १
व्याथानो अंग थाशे, चार तेनी साथे लाशे;
आव्या धरवासे वामे वासे हे; मुनिवरेने० २
नेंद्र ते स्वेच्छाचारी, शुभा कियाने विचारी;
ध्यान धरे नारी नारी नारी हे; मुनिवरेने० ३
बाउ तेनी बलिदारी, डोथे ने आजाहारी;
ऐकला गया दारी दारी दारी हे; मुनिवरेने० ४
अविभानी अडंकारी, शीघ्रे जारी ने विजारी;
हेणे हुणा न हेणे टांग भारी भारी भारी हे; मुनिवरेने० ५
जैनशाणा हे भारी, लींगोहरामां सारी;
अध्यापक आनंदकारी करी करी हे; मुनिवरेने० ६
कुंभरलु गोकुणलु वोरा.
जैनशाणा मास्तर.

* जालभार चतुमांस रहेवानो समय नाहु अवेदी होमाथी ऐकला रहेवाचा यरी
हात भयवनार आ पद्य अवसरेचित ज्ञानां दाखव झूँट हे. तरी.

શું બોલવું અને શું ન બોલવું ?

૭

શું બોલવું અને શું ન બોલવું ?

આપણા મતુય જીવનમાં વાચાની શક્તિ તે સૌથી ઉત્તમ શક્તિ છે. જે કે શખ્ષે આપણે હમેશા ઉચ્ચારીએ ધીર્યે તે બધા એક શક્તિકુદ્ધન છે, અને જેવી રીતે શખ્ષે જોતીએ તેવા રીતે તે બોલવાની શક્તિ આપણા વિડુદળાં ગયના આપણા પક્ષમાં ફર્ય કરે છે. આ ભાગ્યત બહુજ વિચારવા જેવી છે. બોલવાની શક્તિ તે એક રાજ્ય કરનારી શક્તિ જેવી છે. જે તેનો ધૈર્ય ઉપયોગ કરવામાં આવે-તેની સાથે નાયપુરસર વર્તવામાં આવે તો તે શક્તિ આપણા લામગમાં ઉત્તરે છે, આપણા પક્ષમાં ચુકાડો આપે છે, નહિ તો તે આપણાથી વિડુદ વર્તી આપણી વિડુદ ચુકાડો આપે છે; એટલે કે આપણે તે શક્તિનો જેવો ઉપયોગ કરીએ, જેવી રીતે તેને વાપરીએ, તેવી રીતે પ્રત્યક્ષ હુલો તે હેખાડે છે. ઉચ્ચારનો આધાર વિચારો ઉપર રહેલો છે, જે કે શખ્ષે આપણે ઉચ્ચારીએ તે તે શખ્ષે મન ઉપર મુનઃ મુનઃ અસર કરે છે, અને તેવીજ જાતના-વચનાનુસારી વિચારો ઉપરને કરે છે. આમ હોવાથી ઉચ્ચાર કરતો-યદ્રા તદ્રા-મનગમાં આવે તેવું જોતી નાંખતાં બહુજ વિચાર કરવાની જરૂર છે. આ પ્રમાણે વિચારનો આધાર પણ ઉચ્ચાર ઉપર રહેલો હોવાથી મતુષ્ણાં ચાલુ ટેવામાં પણ ઉચ્ચાર બદુ અસર કરે છે, તેથી ગમે તેવી ટેવ પાડવામાં-ગયના પણું ટેવ દૂર કરવામાં પણ ઉચ્ચાર-વાચા સાધનભૂત થાય છે.

જે કે શખ્ષે આપણે ઉચ્ચારીએ તે હેઠ એક નવીન જાતની સૂચના કરે છે, અને મતુષ્ણાં શારીરિક, માનસિક, નૈતિક બધારણનો પાચે આવી સૂચનાઓથી રચાતો હોવાથી બોલવામાં બહુજ વિચાર રાખવાની જરૂર છે, તે ઉપરથી આપણે હેઠે જેની આપણને આગત્યતા હોય, જેને આપણું ધર્યાંતા હોઈએ, જે પ્રફાસની સપૂર્ણતા મેળવવા આપણે પ્રયત્ન કરતા હોઈએ તેવી જાતની ભાષા વાપરવાની હમેશાં ટેવ પાડી. આપણે આપણી ભાષા એવી રીતે વાપરવી-આપા દ્વિવસના વર્તનમાં એવી રીતે બોલવાની ટેવજ પાડી હેવી કે જેને લીધે આપણી ભાષા, તે ઉપરથી ઉપજતા વિચારો, આપણું મન, અને આપણું જીવન પણ જે નિશાન ઉપર પહોંચવા આપણે ધારતા હોઈએ તે તરફ પહોંચવામાં સહાય થઈ શકે.

આપણા ચાલુ રીતરીવાનેભાની-ભાવાના પુછગદેનો ઉપયોગ કરવાની ટેવમાં ઘણું એવી જાતના વાક્યો હોય છે કે જે જીવનના આગળ પ્રયાણુમાં ભાધકરૂપ ઘણું છે, એવીજ રીતે ચાલુ વપરાતો ગાયનો-ગીતો પણ તેવા ભાષકરૂપે થનારો

दोय छे. तेथी जे आपणे आगणा वधवा धन्दिता ढोऱ्याचे, आ लुकननी अरे-
गही सुंदरता आनंदतांगो निचार थेतो लाय, ने उच्च निशान मारा करवा
मायल फरवा ढोऱ्याचे, कं हिसागा प्रयाणगां गशगुवा रंडवा ढोऱ्याचे, ते निश्चन
प्राप्त करवा माटे ते हिसातरदृ ज्वा जे इच्छा रुक्ती दोय तो तेवा नकामा उच्चारे ।
इगेशने माटे परिहरवा-छोटी हेवानी ज़रूर छे. आवां आवां वाड्येचांगी केट-
लाठ तो लुढ्यने अवा वडावा थर्ड गथा ढोय छे, भन आशे अटवा गथा नीट
सांभार्घयो ते बांधाई गथा ढोय छे के तेने हर करवामां पालू चांगता इलाजे
वेवा पठे छे, सततू उघम फरवो पठे छे, तेनी उपरनी चालु शण्यु-भांत अने
तेवा नकामा उच्चारे हर करवानी भननी चालु प्रेषण्याची छिवटे ते हर करी शकाय-
षे अने आगणा प्रयाण भाटेना आपणे स्तो निष्ठांक थाय छे—आपणे आगणा
वधी शकीवे अीचे.

कुहरतनों एक सामान्य कायदों छे के तमारी जातमे तमे कही लकडी गथुता
नहि. जेवा तमे तेने गथुशो, जेवा विचार अने उच्चार तमारी जात माटे
तमे करेण्या तेवाज गरेण्यर तमे थेशो. तमे न्यारे कोई पलु बाणत माटे “आ
माराची बानशे ज नहि,” “आ हुं करी शकीश ज नहि,” “आ करवानी गारामां
शक्ति ज नसी.” तेवा गोटा विचारे ठ्यो करेण्या, अने ते प्रभालू उच्चार
कर्या करेण्या, अन्यने तमारी शक्तिनी दीनता खलाच्या नक्तेणा तो पक्की तेवुं कोई-
पलु कार्य तमाराची बानी शक्तेज नहि. तमारां आवां वाड्येचा वगारी शक्तिने-
कार्य करवाना उत्साहने आवरी हे छे, अने तमारी आगणा प्रयाण बांध पडवा
जेवुं थध जय छे. के कार्य करवानी तमारी इच्छा ढोय, तेनी संपूर्ण शक्ति
तमारामां कहाच न ढोय तो पालू केटकी शक्तित ढोय, तेटकीना गुरेपूरो उप-
योग करो, तेनो संपूर्णशी लाल व्यो, अटवे जे शक्तिनी एक शतमने ला-
गती होते ते स्वतङ्क संपूर्ण थध जशे. शक्तिनी एवाचाश ते एक मानसिक
कृपना भावेज छे, अने चालु अंतशी आपणा कार्यमां वणगी रुक्तां ते ला-
गती एपाशसनी तुरतज नाश थाय छे, अने पारेव कार्य तस्तज करी शकाय
छे; पलु नकामा प्रतिबंधक वाढेचा ओलवाची तो ते कार्य कही पलु संपूर्ण
बानी शक्तुं नसी. आ वात ध्यानमां राणवानी ज़रूर छे.

वणी न ढोय तेवा शक्तिनी गोटी बाढाई भासवी, गोताना खलुगां कुंक्वा
ते पालू कार्यशक्तिने झानिक्तां छे. के कार्य करवानी शक्तित गोतानामां रुक्त
डोय रेनो येत्य उपयोग करवो, पलु नकामी बाढाई भासवाची तो उक्तुं तुक-
कान थाय छे. माटे निशें गळती आपासे नकामा न्यू हरो पालू आडा नसी.

શું શાલવું અને શું ન પોણવું !

૮૯

જ્યોતિ કોઈ એક માણુસ એજ માણુસો કાર્ય કરતા હોય તે કરતો ચોતાની શક્તિ અને શુદ્ધિના પ્રગાઢુમાં વધારે મેટું કાર્ય કરવાનું માણે કે છે, વધારે કાર્ય કરવાના ઉત્ત્સાહ જાળવે છે, ત્યારે પણી વળત તેના રનેલીઓના અને સંબંધીઓના તેને એક ખરા દિલચિંતા તરીકે ઉદ્ઘાપણ ભરેલી સલાહ આપતાં વારંવાર કંડે છે કે—“ તમે આવાં કાર્યો શા માટે ઉપાડો છો ? આવાં કાર્યોના ગોળથી તમારું શરીર ગાગડી જશે, તમારી તંહુરસ્તી અરાણ થઈ જશે અને કદાચ તમને અવતું જોઅમ લાગશે.” આવું બોલનારને આજ્ઞેજ એમ ખણર પડે છે કે તે તેમના ઉત્સાહયેલા તે વાક્યોજ તે માણુસને હાનિકર્તા નીવઠે છે. કાર્યના બોલ કરતાં આવાં નફામા ઉત્સાહયેલાં વાક્યોજ વિશેષ તુફલોન ફરે છે. અને કાર્ય કરવાનાર માણુસને નિરૂત્સાહી કરી હેવા ઉપરંત તે કાર્ય તે માણે રાણે તો તેની તંહુરસ્તી ગાગડી જવાના ભયસૂચય વાક્યો તેવું પરિણામ લાવવા પણ કદાચ સમર્થ થઈ શકે છે, તેથી વાક્યો ઉત્સાહનાં બહુ વિચાર કરવાની જરૂર છે. કોઈ પણ કાર્ય કરવા મનુષ્ય સમર્થજ છે. અને એ કાર્ય તે ઉપાડે તે કાર્ય કરવાનો તેના મનનો દૃઢ આચાર તે કાર્ય સંપૂર્ણ કરાયે છે. ગણું આવાં નફામા ભયસૂચય વાક્યો તો તેના કાર્ય કરવાના ઉત્સાહને નરમ પાડે છે; અને કદાચ તેને એ સથ દર્શાવવામાં આવે છે તે સથ પણ છેવટે અરો પ્રારે છે. કાર્ય કરવાથી—અતિથય કાર્યના હણાણથી મનુષ્યનું મનુષ્ય થાય છે, અંગરનેની તંહુરસ્તી ગાગડે છે, તેથી ગાન્યતા કોઈ માણુસને તમે હસાલશો તો પ્રાંતે અવસ્થ તેવું જ પરિણામ આવશે, તેથી ખાસ ધ્યાનમાં રાળવાની જરૂર છે કે આવાં ભયસૂચય શરીરો કરી પણ આલવાં નહિ; દુમેથા ઉત્સાહોનાદઠ-પ્રેરઠ વાક્યોજ ઉત્સાહવાં. આવી રીતનાં ભયસૂચય વાક્યો ઉત્સાહનાં સંબંધીઓ કાર્યો કરવાની શક્તિને ઘરાડે છે. અને તેવા સંબંધીઓ—મિત્રો—નેહીઓ ઉલદા શનુની ગરજ સારનારા થઈ પડે છે. તેથીજ ગોલાં—આપાનાં પુછગલો મુખની બાદાર ફાંદતો બહુ વિચાર કરવાની જરૂર છે. આવી રીતના નિરાશાસૂચય વાક્યો ઉત્સાહવાથી ઘણું માણુસાની તરણીયત બાગડે છે, અને તેથીજ ફંડેનાય છે કે “ આવાં મિત્રોથી મને પણાયો.” સથ દર્શિકાત તો તેજ છે ગમેતેટલું ભારે કાર્ય કરી પણ તુફશાન કરી શકતું નથી. કાર્ય કરવામાં-કાર્ય ચર્દણું કરવામાં એટલું ધ્યાન રાળવાની જરૂર છે કે તે કાર્ય આપણું મન સાથે મળતું આવતું હોય. એ કાર્ય કરવામાં મનનો ઉત્સાહ વધે તે કાર્ય અવસ્થ સંપૂર્ણ કરીજ શકાય છે.

કોઈપણ ઉત્સાહી કાર્ય કરવાનાર તમારા વાક્યોથી નિરૂત્સાહી થાય તેવું આલવાનું પરિહસને. તમારા શરીરોથી પ્રયોગ મનુષ્ય તેના કાર્યમાં ઉત્સાહિત થાય-તેવું ગત કાર્ય કરવામાં બત્સુર રહે તેવાં વચ્ચનો ઉત્સાહને. આવાં ઉત્સાહ-

जनक वाडेया जोलवारी ते भाषुस तेना लीपेत कार्यमां इतेहमंद नीवडेये, अट-
हुं नहि पखु तेनी कार्य करवानी शक्ति अने तेनी आरोग्यतामां पख वज्जि
थये, भाटे अयसूचक शण्ठो वापरवानी टेक आस पडती मुक्तवानी जरूर छे.

वज्ञा आपणें ज्यादे ठांच नवुं कार्य उपाडानी इन्धा राखता होइसे लारे
गनने अंत्वा लायसूचक शण्ठों गोलकुल फ्यावी हेवानी जरूर नाही. तेवां नकामां
निझूत्याही वाडेये तमारे मारे लक्ष्यारातांक नथी तेम भारी अदरणु फरेल कार्यमां
उत्साहाची भंज्या रहेवानुं ध्यानमां राख्यु. कार्य अदरणु फरनारे ते “अदरणु
फरेल कार्य हुं संभूर्ण ज दीर्घ, आ कार्य भने आरोग्यहायी छे, कार्य करवानुं
होताचीज गने आनंद आनंद छे, निझूत्याही गोरी रहेवाही गाही तंहुस्ती बग-
डो, कार्यज मारामां विशेष विशेष शक्ति, उत्साह अने अंत आर्पणे.” अवां
अवां उत्साहजनक वाडेया उच्चारवानी अने तेने अमलमां मुक्तवानी जरूर छे.
तेवां उत्साही वाडेया अन्य कार्य फरनार भाटे गोलवां, अने आपणे कार्य कर-
नार होइसे त्यादे तेवां वाडेये फरद मनने होरवु. तेम फरवाथी कार्यसिद्धि
थित थये.

घणु मनुष्याने अवा टेव होय से के तेया चातानी किंमत भानु अंत्वा
आडे छे; तेमने स्वशक्तिनो गोलकुल भरेसो होतो नथी. डेहिपखु धारेल
कार्यमां इतेहमंद थवानी तेमने शांगज रह्या फरे छे. तेया वारंवार गोलवा-
नं बाणाय छे के—“हुं आ कार्य संभूर्ण फरी शक्तिश ज नहि-माराचो ते णनी
रहेवानुं नथी.” आपणें आपणा अदरणु फरेल कार्यमां गमे तेट्टीवार नि-
झूत्या नीवडिये, तेपखु आवां निझूत्याही-मननो उत्साह अंग फरनार वाडेयो
होती पखु उच्चारानां नहि. “तेमे डेहिपखु कार्य संभूर्णशी फरी शक्तवाना ज
नथी” तेया विचार अने उच्चार तमारी ग्राम शक्तिने पखु भंडे पाडे छे,
तमारी शक्ति घटी जय छे अने गमे अदरणु फरेल कार्य तमारी शक्तिना हहाई
भास्त्रास्त्र छे अमे तमने अस्त्राय छे. आ गोटुं छे. वज्ञा “माराचो आ कार्य
भंड हाते यध शंडे छे.” “गा कार्य साङ्ग थवानुं ज नथी.” तेवा विचार
अने उच्चार पखु नीचो फरेज मनने होतो जय छे. ए दिशामां आपणु भान
चांडे छे ते दिशा तरहार आपणे प्रयत्नु इरीचे गोप्ये, वेळी आवना तेवाज
सिद्धि थाय छे; तेथी ज्ञ तमे तमारा कार्यां-तयारी कार्य फरवानी शक्तिमां
उल्पर जेण्यो तो तमे ते दिशा तरहार होराशो, तेवी लानिदारक वाल उपरज
तमाङ्ग चित चांच्यो, अने प्रांते तमारा कार्यमां तमे इतेहमंद नीवडेयो डे नहि
ते खंशय जेतुं ज रहेये. क्षाय तमने तमाङ्ग अदरणु फरेल कार्य तमारी भनो.
वांडना अगाडे सिद्ध थतुं न लागो, तोपखु निझूत्याहना विचारो अने तेवा

શું બોલતું અને શું ન જાલતું ?

૫૧

હવ્યારો તો પણતા જ મૂકુને. મંદ લાગતાં કાર્યમાં ઉત્સાહથી મંડો, એટલે પ્રાંતે તે કાર્ય આવશ્ય સિદ્ધ થવાનું જ. તમારી ધારેલ ધારણામાં વિભેદભાઈ નીવરણો જ. પલું કે લયસ્યોચ્છ નિર્દિષ્ટાહી વાક્યો જ હવ્યાયો કરશો તો તે કાર્યમાં તમને વિજ્ઞય માગવો મુશ્કેલ છે. ઘણી વખતે ઘણી મનુષ્યો. કાર્યમાં નિષ્ઠા નીતિ છે, નેંબા તેનામાં તે કાર્ય કરવાની શક્તિના અભાવ કરતાં આવાં તેનાથીજ હવ્યારાવેંા અગર અન્ય તરફથી સંબંધિતાં વાક્યો જ કારણભૂત હોય છે. જે ઉત્સાહ વાક્યો હવ્યારસ્વામાં આવ્યાં હોય તો તે કાર્ય તેનાથી જ સંપૂર્ણ થઈ શકે છે; માટે જ શું બોલતું અને શું ન બોલતું તે બહુ વિચારસ્વાની જરૂર છે. આપણા ઉત્સાહજનક વાક્યો આન્યને કાર્ય કરવામાં સખળ આધનકૃત થાય છે, ગને આપણને પણ અધ્યક્ષ કરેલ કાર્ય શિક્ષાતાથી સંપૂર્ણ કરવનારા થાય છે, તેથી હુમેશાં તેવા ઉત્સાહ તરફ દોરનારાં વાક્યો જ હવ્યારસ્વાનં-નકામાં વાક્યો ગોલવાનું છોડી હેતુ. કફી તેવું લાગતું હોય ત્યારે પણ અન્યને તે માટે તેવી નકામી શિક્ષામણું હેવા કરતાં મેનતુંંજ અવલંબન કરતું; અને તમારા પોતાથી તો સર્વ કાર્ય આવશ્ય થાની શક્ષે જ એમ ધારી અધ્યક્ષ કરેલા કાર્યમાં સતત, ઉદ્ઘમથી મંદનું.

શુદ્ધેશુમાં એક ચાલુ વર્પસાતી છેઠુંવત છે - Heaven helps those who help themselves - એવાં પોતાને મહદ કરે છે, તેને દેવીશક્તિ પણ મહદ કરે છે. આ છેઠુંવતનો અરેપરદો ભાવાર્થ ઉપરોક્ત ઈકીકૃત વાંચવાથી સમજાય તમ છે. જે તમે તમારી જાતને મહદ કરશો, તમે તમારાં કાર્યો ઇસેદ્ધમદ થાય તેમ પ્રયત્ન કરશો, તમારી શક્તિને હરેક પ્રાસ કાર્યમાં મંદ નહિ ધારતાં તે સર્વ કાર્ય કરવા સર્મર્થ છે તેમ માનશો, અને તે સાથે સંપૂર્ણ ખાતાથી પ્રાસ થયેલ કાર્યમાં મંજૂર રહેશો તો આવરા કુદરત તમારા ઉપર મહેરભાન થશે ગાને તમને વિજ્ઞય મળશે. નકામાં મનને પણત પાડનારા વિચારો કરવાથી અને મનને હલકી પાયરિએ હિતારનારા વાક્યો હવ્યારસ્વાથી કોઈ પણ કાર્યમાં ઇસેદ્ધમાં થવાશે નહિ. ધીરજ અને ખાતાથી કાર્ય પાછળ મંડો, વિચાર અને હવ્યારા કાર્યને અનુકૂળ રાખો, નકામા હથાચાતા વિચારો તરફ હુલ્કા રાખો, તમારી શક્તિની વિશાળતાનીજ ભાવના રાખો, નિષ્ઠાની મળે તોપણ તેની દરકાર કર્યો. વગર સુન: સુન: તેજ કાર્ય સંપૂર્ણ કરવા પ્રયત્ન આહરા, એટલે પ્રાંતે દેવી સહાયથી આવશ્ય તમને તે કાર્યમાં વિજ્ઞય મળશેજ, તમાર્દ અધ્યક્ષ કર્ય સંપૂર્ણ થશોજ.

કોઈ પણ રદ્દગુણની પ્રાપ્તિ કરવી હોય ત્યારે “ તે સદગુણ ભારાથી કેમ અધ્યક્ષ થઈ શકે ” “ ભારાથી તેમ બની શક્યોજ નહિ ” તેવા વિચારો કરવાથી કોઈ પણ ભાષણ નેત્રિક ઉચ્ચતિ પ્રાસ કરી શકતોજ નથી. જ્યારે જ્યારે એવી નાળજીએના વિચારો તમે તમ્મારા મનને છુદ્ધ કરો છો ત્યારે ત્યારે એક ખાલુથી

जेने प्राप्त कर्त्तवा तमे भवेष्यते। तेजेव धीरु भावु तमारे हार्षेज तमे त्यु हो छे। ‘येह द्वाने सांख्यी धीरु क्षेत्रे क्षेत्रे नामनारः’ जेम डेई शिक्षा अद्वय द्वी शहतो नथी, तेवाज रीते येह भावुष्यी सद्गुणादिकर्त्ती प्राप्ति माटे प्रयत्न सेवी धीरु भावुष्यी ने भाटे अवश्यक निराशाक्षनक विचारो विचार नार ठांध पञ्च इण्मासि द्वी शहतो नथी ते निश्चय मानन्ते। ज्यारे तमे तमारी शक्तिं हिपरज अशद्वात्ता लेहो, त्यारे तमारी शक्तिनो तमे लाल लै शहतोज नहि। तमने तगारामां भावुम घटी भावीभावो, भूलो, ते भावां तो चार जेवां छे। तमारु अनांडर विचारो, तमारी शक्ति अगाध मे। तेमां भावुम भडाए यारोने ह्रस्व कर्त्तवा तमे यूर्ज समर्थ छे, तमारु वीर्य अजगावो, अशद्वात्ता निचारो ह्रस्व भूझो, अदले अनांडर भुजी गयेवा योहो-बुंदाराभेदो तरतज तमे नाश द्वी शहतो। ते भूलो-भननी नवाराहि-निरुत्साधीण्यु विजेते तो तमारा अद्गुण्यने-तमारा आत्मिक सुणने लुंदवा अनांडर प्रवेश्या छे; तेशी नहामा विचारो वाउड तेने सहाय आपवाने भावते तेनो नाश नक्षत्रानो प्रयत्नज आहदो; जेशी अदेखदो आनांड-शुद्ध आनांड प्राप्त कर्त्तवा तमे समर्थ अर्ह शहतो।

हिपरनी सर्व धारात विपरयी शुं भोवतुं अने शुं न भोवतुं, डेवा विचार कर्त्तवा अने डेवा परिहर्तवा, डेवुं वर्तन राखतुं अने डेवुं त्यजतुं ते शेषे बहु अशो पञ्च समन्वय तेम छे। आआ हिवसनी धार्यपद्धतिमां वाला वाठयो-पाला विचारो अवा इह थध गयेवा छेय से के ते ह्रस्वता पञ्च मुखेव एटे छे। १६ आवद, सेतन, विद्यम अने ते ह्रस्वतानी संगौर्ण गीनट छेय तो ज ते ह्रस्व द्वी शहाय छे। धारी वर्णत तो आपला भोवतावी आपलुने अगार अन्यने नुक्शान थाय छे के डेम तेनो पञ्च आल धर्य वगर आपला विचारो दक्षिणवा आपले तेयर थध जहाचे छीचे, तेथी ठांध पञ्च भोवता यडेलां अहु ज विचार कर्त्तवानी जडूर छे। जेम शुंक्युं गणातुं नथी, तेम भोवतुं णहार गडे छे, पछी याचुं मेडामां पेसतुं नथी। धारी वर्णत तो नहामा विचारयेवा पाठ्ययी हृदययेही असर थती जलाय हे, तेथी आवी रीते अविवेका शब्दो गानसिंह भागने पञ्च लानि फरे छे तेवुं संगत्या पछी दमेशां उत्साहजनक वाठयोज उच्चारवा अने निराशाक्षनक वाठयो परिहर्तवा प्रयत्न सेवयो?'

कापडीया नेमच्यांह गीरधरवालः

બંદરાજના રાસ ઉપરથી નીકળતો સાર.

૬૩

ચંદ્રાજાના રાસ ઉપરથી નીકળતો સાર.

(અનુષ્ઠાન પૃષ્ઠ ૬૭ થી.)

મનુષ્ય ૧૫ મું.

ચંદ્રાજન કુરો થયાને એક માસ વિતી ગયો. એટલે પ્રણ રાજ વિના અકળાઈ. ગુણવળી તો માતાના ભયથી કુડાને જોપવીનેજ રાખતી હતી. ટાર્ન લુકે જે કાંઈ પણું કારણ મળાયો તો વીરમતી તેના પ્રાણ લેશે એવી ગુણવળીને ખાંચી થઈ ગઈ હતી. પ્રણવર્જ અકળાઈને પ્રધાન પાસે જઈને છબું કે—“ અમને રાજ સાથે મોગવો. આજ એક મહિને થયા અમને રાજના દર્શન થયા નથી તો હવે આજને તમે આગામે એમના દર્શન નહીં કરાવો તો પછી અમે પરદેશમાં જઈને વસ્તીશું. તરો રાજ થઈને રાજ આગો એટલે અમે ચાલ્યા જઈએ. હાડી હ્યા વિનાનો ધર્મ, હત્તમ કુળ વિનાનો મનુષ્યનો બાવ, હાત વિનાનો હાથી, મૂર્ચિ વિનાનું હવલુંન, જાણ વિનાનું સરોવર અને નેત્ર વિનાનું મુખ એવું રાજ વિનાનું રાજન્ય શોભાનું નથી. રાજ છોટું પ્રણ સુધી હોય છે. જે રાજ ન હોય તો પછી વનમાં જઈને વસવું શું જોઈએ ? ” મંત્રીએ છબું કે—“ મેં પણ એક મહિનાથી રાજનું હીઠા નથી, તેથી મને પણ તેમના દર્શનની તીવ્ચ છંચા થઈ છે. હું આજે તેનો સર્વ કોઈ મોગવીશ અને પછી તમને છંચાશ. તરે કોઈ વાતની ચિંતા કરશો નહીં, નગરીમાંજ આનંદથી રહેને. ” આ પ્રમાણે કહી અન્યાન કરીને સચિવે પ્રણને વિસર્જન કરી. પછી પોતે વીરમતી પાસે આવ્યો અને પ્રણની સર્વ હૃકીકન નિવેદન કરી.

મંત્રીએ વીરમતીને છબું કે—“ માતાજી ! રાજ આમ છાના ક્યાં સુધી રહી શકેયો ? તમે તેમને રાજલુંનમાં જોપવી કરાયા છે પણ તે કાંઈ ઢિક ઠેણવાતું નથી. તમને મારા ઠેણવાથી રીસ ચકે તો બબે ગાળ દ્યા, પણ આવી સ્વીચ્છાએ મતિ ન કરો. મેં આજ કાલનો વાયદો કરીને આજસુધી પ્રણને રોકી રાખી છે. વાત કરનાં એક મહિનો વીતી ગયો, તો પણ તમારી કૃતિનો પાર હું પાણી શક્યો નહીં. હવે સા દોઢને એ વાતમાં સંશ્ય હિતપત્ર થયો છે. લોકો છે કે આ તો ખાલી આરણ્યામાં એ સાખેલા કેવું થાય છે. માટે હવે રાજને ગમે તેમ કરીને પ્રસ્તિકૃ કરો. તમે મોટા છો, મોટી ગ્રામી ઉપર મોટા છો, પણ આમ છેકલવાદી કરો છો તે કાંઈ ઢિક નહીં. માટે જેકેવાત ખરી હોય તે દર્દી દ્યા, હવે પ્રણ મારાથી રોકાય તેમ નથી. ” આ પ્રમાણે મંત્રીએ સુક્ષ્મિપુરસર તાણો મારીને કહું; તો પણ તેની અસર વીરમતી ઉપર કાંઈ થઈ નહીં. ગમે તેથું ખાગક ફેરદે પણું જેવા પાવઈને પાનો ન ચડે, તેમ ઘણું;

૧ ખાગકને ખનશવચાતું દુધ નપુંસક ઓના સ્તરમાં ન આવે

मंत्रीनुँ उद्देशु तमाम सांगणी अहनि पश्ची वीरभट्टी गोलीडे—“हे मंत्री! सांगणा, आमां वांक भाव नारो छे. तो राजने हाणी नाराया छे. ने भने उद्देश आव्यो छुँ. भारा वहाला पुनर्नी इत्या कर्त्ताने तुँ आहो इत्यादी तो थयो छुँ ने वयी मार्ही पासे इत्या अहनि उद्देश आव्यो छुँ. आ वात गंते तो बाहु तिवसरी लालवामां आवी दती पशु में छाणी राणी दृती. में जाझुँ के डोख फेडे? पशु न्यारे आज इत्या अहनि भने अमलवया आव्यो छुँ त्यारे उद्देशु पडे छे. हुँ लुंगी छुँ तो तुँ शु रुडो छे? भारा अवश्य तुँ गाईश तो हुँ तारा उपेणा उपेणीश. अमां कार्य तुँ आवी लय तेम नथी.” आवी अध दती वात सांगणीने मंत्री गोलीडे के—“यारे माताजु! तमे आ शु बालो छो? परदा थया अंगो तो कांधक विचार रागो. में राजने इष्या तेमो को आद्धी छे? वयी हुँ राजने शा भाए लालु? भारे शु लेवुँ हेवुँ दहुँ? भाए ने गोली ते विचाराने गोली आवी गोली वातो इत्याप्ती काढव्युँ शु काढव्यो! परमेश्वरो तो लय रागो. में शीणामणी वात की तेमो बद्दो. भने डी आव्यो? में जाझुँ के आ वातशी तमे राजु थयो. तेम गह्वे तमे तो उल्ट वाजु रम्याः पशु आ दार्य लाली लांसानी वात नथी. तमेन कठोने के हुँ राजने शा भाए लालु? ने शी दीने लालु?”

आ प्रमाणेना मंत्रीना वयन्ना सांगणीने तेमे अदांतमां लार्ज कर्ह वीरभट्टीन्ये काशु के—“तारे चांगनी वात वधारे छेहनी नही. अमां सार नेवुँ नथी. अने ले वधारे गोलीश तो वाङ्के लाकुडे वांका वे नेवुँ थयो. भारा दांके ने तारा उधाउ अे उद्देश याठ रागने. आजी हुँ धरनी वात तेमक इहुँ छुँ के—‘चांदरान तो विधाधस्ती विद्या भाषे छे तेथी तेमे प्रकट कराय तेम नथी.’ भाए तारे तेनुँ तो नाभग लेवुँ नही अने नवी काणा कर्वी. आपणे गे मणा लालु, तो पश्ची वीरुँ गोलनार केण छे? ‘हुँ राजा तुँ मंत्री’ अे प्रमाणे अप्य जाहेव करी हे. अने ले भाद्रँ इहुँ नही कर तो तेनुँ कृपा बाहु इहुँ गोसजो. पश्ची तारी वात तुँ लालू. वधारे उद्देशी नथी. वयी हुँ न्यारे प्रकटपछू राज अहनि गेसीश त्यारे पश्ची प्रवन्नने शु अरचन रुहुवानी छे? पश्ची क्यां राज वगरनुँ राजय उद्देश वातुँ छे? भाए ले तादू ने भाद्रँ लित इच्छतो हो तो भारा क्षब्दा प्रमाणे कर.”

मंत्रीन्ये वीरभट्टीनुँ उद्देशु इधुल रुहु. ते पशु समाना लाली थयो. अटवे वीरभट्टी राजु धर्य. तेलू इहुँ के—“—ग, इवे नगरमां खरह वशदाव के आज्ञा वीरभट्टी राज थेल. छे तेथी शीअं तेनी आज्ञा भानवी. ने कोइ तेनी आज्ञा नही भाने तेने नगर बद्दार आठी मूळवामां आवशे. तेथी क्यो आभापुरी अण-प्रमाणी धर्य होय ने. यमधुरी वहाली होय तेलेज अनगी? थहुँ.” मंत्रीन्ये

ચંદ્રાળના સષ્ઠ ઉપરથી નીકળતો સાર.

૮૫

વીરમતીની આજાનો તરતિજ અમલ કર્યો. લોકો તો તે સાંભળીને સહૃદાજ થઈ ગયા કે “આ શું ? રાજ ઓ વિનાના સાંભળ્યા છે. પણ પુરુષની સ્વાગતીની લી ડેંડ જગ્યાએ સાંભળ્યા નથી. આભાસુરીમાં તો આ નવી વાત થઈ છે. અર્દી તો સ્વીયા રાજય થયું છે, ડેમકે પુરુષ બધા નાચ પાર્ની ગયા છે! આ પ્રમાણે લોકો વાતો કરવા લાગ્યા, અંતઃ કરણ્યમાં ઘણ્ણૂ જેહ પામ્યા પણ વીરમતીના ભયથી ડેંડ કાંઈ ઓદી શક્યું નહીં. વીરમતી નિવિને રાજય કરવા લાગી અને રાજયના અમલમાં મસ્ત બની ગઈ. મોટા મોટા સામંતો પણ તેની આજા માનવા લાગ્યા. ‘કેને કાગ રૂઠાં હોય તેજ ચંદ્રાળને સંખારે’ એમ થઈ પણ્ણું. રાણી મંત્રી ઉપર પ્રસત્ત થઈ તેણે જાણ્યું કે મારી ને મંત્રીની લોડ બચાવર મળી છે. હું એમ ગાડુંનું તેમ એ બનાયે જાયછે. અને એણે પણ ચંદ્રાળને સંખાસ્તાનું કાંઈ તીવું છે.

એક દિવસ મંત્રીએ હાવડા થઈને વીરમતીને કહ્યું કે—“ખાલી ! તમે તો રાજ્ય બાહુ સુધાર્યું. તમે ચંદ્રાળને ભૂલાવી હીધા. ડેંડની પદેવી વસ્તુ આપણા રાજ્યના ડેંડ લઈ શક્યું નથી. આંદું રાજ્ય તો ડેંડએ કર્યું નહોતું. આ તો વાદ ને અકરી એક આરે પાણી પીવે તેવું થયું છે. દુઃમલાં તો તમે ચામના ‘હામ ચંદ્રાના તોપણ ચાલે તેમ છે. તમારી સામું ડેંડ પણ કું કરી શકે તેમ નથી. આર્ડી રાજ તો ઘણ્ણા થઈ ગયા, મેં પણ ઘણ્ણા રાજન્યો જ્ઞાન ને કેરિય પણ તમારી પાસે તે ડેંડ ગણ્યુટીમાં આવે તેમ નથી. તમે ઓ જાતિ પથા તેનો જેહ ન કરોઃ કારણું કુંજવી પણ ઓ જાતિજ છે. વળી થીન વૃદ્ધાવસ્થાને પામે છે ત્યારે રાજીરે એવડ વળી જઈ થીજને નમે છે અને તમે તો થીજન્યાને નમાયા છે તેથી વૃદ્ધાવસ્થા પણ તમારીજ અરી છે.” આ પ્રમાણેના મંત્રીના વચ્ચનો ચાંબળાને વીરમતી મનમાં બાહુ રાજ થઈ, પણ એ નશુણી જરા પણ મનમાં વાળું નહીં. તેણે મંત્રીને કહ્યું કે—‘તું મારો અર્દે સેવક હું. હું તારું વચ્ચન હવ્યાં તેમ નથી.’ મંત્રીએ જાણ્યું કે—‘આપણે પણ આ ડીક વાધનું વાગાવું થયું છે?’

એવામાં મંત્રીએ પાંજરામાં કુકળને હીડો એટલે વીરમતીને પુછ્યું કે—“તમે આ શું કર્યું છે? પાખીને પાંજરામાં શા માટે પૂર્યો છે? અથવા શું ડેંડ હેવને કળાને કર્યો છે? કે હોય તે કહેલા.” વીરમતી ઓદી કે—“એ તો વહુને રમવા માટે વેચાતે વીધો છે. એ થીચારો હુંઓ થતો હતો તેનાપર હ્યા આનવાથી લુલહયાની ઝુદ્ધિને લઈની રાણ્યો છે. એનો હાણ્ણા પાણી હોય ત્યાંસુધી લદે એ પણ આનંદ કરે. વળી એ આંદું દેખે લગાડે છે. મને પણ લાજવા નહેવી ઉડાડે છે.” મંત્રીએ કહ્યું કે—“એ વાત અરી પણ આ પાણી વેચાતું

४३

जीवर्मने अधिकारा.

‘दीपिक’ अस्तु न थी. अनेक दक्षतरमां वापायेल न थी. माराणी कांड आपनो ही सार्थी थानो न थी के हुं. न बालुः भाटे हुं तो तमारा धरनुः माणस छुं तो थीं भने के आदी वाल होय ते कहो।” वीरमती ऐकी के—“अमी वातमां अहु पूर्वप्रश्न शुः करे हो ? अमां तुं कांड समज नहीं वणी पैदा अर्थमां न माणायानुः कहे के पशु भारी पासे धरेलुः क्यां थेहुः हे. तेमांथी अक भूषण आपाने आ कुटो अदीवा हो. हो इरने ए बालतमां तुं भने गृहीत नहीं. मादः कहु मानी जने, नहीं तो पक्षी तुं पशु भीजे तेवा थक्क बहश।” मंत्री आ शहदो आंबणी चुप थक्क गयो. तेनी लुक आगण उपडी नहीं. अवामां अंदरना भागमां गेडी चुपावणाने तेहु ढहन करती हीठी. मंत्री ए तेनी सामु नजर गांडीने लेखुः अटसे तेहु इवेणीमां अक्षर लगाने मंत्रीने समजनयो. के—ए कुटो भारो पति अंदरान छे. मंत्री तरान समज गयो. तेना हितमां अहु आकर्ष थयुः; परंतु ते वाल तेहु वीरमतीने नहीं नहीं. भनमां समज राज लाईने योताने घरे आवयो।

वीरमती ए अंदरानने कुटो डरी हीपो के ए वाल हेशप्रहेशमां अहु ज विद्वार पारी. हरेक माणस तेने पिङ्कार आपवा लाया अने ‘राज्यना लोके भाताए पुनर्नी आवी माठी दशा झरी हो : अम कहेवा लाया. परंतु वीरमतीना लयथी केहु आगण पशुः वरी शक्युः नहीं; केमें चोदा माणसनी वानो इयो पक्षी अहु निमायतुः परे हो. केदवां राजनें पशु तेनी विद्याना आगथी लय पारीने तेने तम्हा अने तेनी आज्ञा मानवा लाया. वीरमतीनी शक्ति अद्वित लेवारी के वड ला ते पशु अवक थक्क जया. ए अवसरे हेमरथने हेमरथ नामे राज इतो—तेहु वीरमतीनी आपी हडीकल जाइ. ते राज प्रथम धारी वगन अंदरानाथी मानहीन थयो इतो. तेहु बाज्युः के—आ अवसर हीड मज्जो हो. तेथी ते ‘आसानगदीनुः राज्य देवा तत्पर थयो।

हो लेमरथ राज वीरमती भागेथी आभानगदीनुः राज्य आंचडी लेवाना विद्यारथी प्रथम इत मेडवयो अने पक्षी पाने थडी आवयो. ते अंबामी दीडी-डूत आगणाना प्रकरणमां वांचीशु—गाहारी आपाही दीडी-डूत यदवाती लेवारी वालनुः प्रकरणु पशु यदवाय हो. वणी हरेक रास के चरित्रमां अकाह वोरसरथी धरेवी युद्धनी डारा होय ज हो. क्षां पोतानी दुनिमां गपा रस आंवेका हो तेम पौत्रवा भाटे एरो प्रसांग पशु जरा गीजवे हो ते आगेहु लेवे पक्षी लेशुः. लाव तो आ प्रकरणमां शुः रहस्य रहेहुः हो ते विद्यारी लेईयो.

प्रकरणु १५ मानो सार.

आ प्रकरणमां मुख्य हडीकल सुभति मंत्री ने वीरमतीना संवाहनी न हो. अमांथी आपणु आस सार अहशु ठरवानो हो ते राजनिति काये क्षां अध-

धराये हे. प्रथम प्रकरण १० मा मां आवी गयेवीं हुडीकृत उपरथी शिखुष्णवणी रामगु गर्ड इती के आ अशुभना उहयना विवसा नेम नमे तेम शांतियो व्यतीत कृत्वाना हे. ते पोताना पति पक्षी थां ज्वाली तेन जेती ने हुद्यमां दोती इती. परंतु ज्वालानां कुरेकां हुये वागेकां छावाली अने एक टोकर आवाली एक शिखामाणु भेणवेवीं छावाली हुये ते पोताना पतिने प्राणुनी पेठ ज्वालावती हती अने तेने वीवुक अल्लरमां देखाउती नहोती. वीरमतीना ज्य तेने माथे यमराजना भयनी जेवोज इतो. ते डेपायमान थाय अने कुडाना प्राणुना विनाश करी नागे तो तेने कांट कडी चाकाय तेम नहोतु. आवा कार-झुने दीपे कुडाना दैपे पाथ प्रबन्ने पोताना राजना दर्शन थतो लता ते खांध थां ज्वाली प्रबन्नर्ग अपलायो. अने राज विना प्रबन्न अक्षाय तेमां पाथ नवार्थ नही; केमके दैर्घ्यपाथ प्रकारनी हात भेणवली हुए के दैर्घ्यां करवी हुए तो राज विना केनी पासे करवी? वगा राजनुं काम कांट दर्शेज परंतु नयी परंतु माथे ज्वाली छावाली लखे ते घर हुए के परदेश गयेल छाप्रपाथ औ ज्वालावती गज्जाय हे अने आनंदमां रहे हे तेम राज भाये छावाली प्रबन्न निक्षित रहे हे, तेने कांट प्रकारना भय के चिंता रहुती नयी. अने पोताना राजना वारतहेवरे के कार्यप्रबंगे दर्शन ज्वाली पाथ प्रबन्न सुप्रसन्न रहे हे. हुद्यमां जे शांडा न हुए तो भद्रिना शुं पाथ छ भद्रिना चात्या ज्य तो पाथ राजना दर्शन न ज्वाली प्रबन्न अक्षाय नही पाथ आभापुरीनी प्रबन्न भनमां तो शांडा परी गयेवीं हती के आयपारा राजनी द्विती ज्वर तेनी अपर भाताये कांट पाथ निरुप करेकी हे तेवीं ते अंक भासनो विरह थतां तो अहुज, अठाराह ग्रह. राजने अभावे प्रबन्ने दैर्घ्यां करवानुं ज्यान प्रधान अथवा भंवीज हुए ते तेवीं प्रबन्न आयेवानो मग्नाने भंवी पासे गया, पोतानुं हुआ वरहे कर्तुं अने भंवीये पोतानी कृत्वाने अनुसरीने तेमने शांत करी विद्यय कर्तो.

पछी भंवी वीरमती पासे आयो अने पोताना हुद्यनी वराण प्रबन्नी कृत्वाने भिये सारी रीते अदार काडी वीरमती प्रथम तो अमुं सांकणी रही परी तेले भनमां द्विती द्विती भंवीनुं भोडुं खांध कृत्वा माटे तेनी उपर ज राजक्षत्यानो आरेण भुक्यो. भंवी तो ते सांकणां आजेओ अनी गयो, एटेक्ते तेषु ते आणत पूरतो झुवासो कर्तो अने ए वातने आयी उत्तरवारी दरेक द्वीप रुल करी. आ प्रकरणमां युक्ताती भाषामां वपराती युही युही छेवतेनो समास विशेषे कृत्वामां आयो. हे. भंवी पोतानी तरक्की झुवासो ज्वालावतां रहे हे के-ज्या कांट ज्वाली हांसु नयी के हेर ज्वालाधनी वातमां केटवीक वार एवा ज्वालनी हांसी कृत्वामां आये हे के तेतुं परिषुभ कांट हेतुं नयी. भाव प्रस-

રસ્તણી મશકરીને માટે જ કેટલાક વચ્ચો બોલવામાં આવ્યા હોય છે. અહીં કે વાત છે તે તો બોટા જેખમણી છે. મહીના દિવસથી ચંદ્રાળ નજેરે પડતા નથી તે બાળન પુછનાં જ્ઞાયા સામું ગેણે પહુંચામાં આવે તો પછી લોડો શું જાણે? અહીં આસ એ વાતપર ધ્યાન આપવાનું છે કે હજુ નેણે અવાચ્ચ એવું જગતમાં કંઈ છે જ નહીં. ચંદ્રાળને મારી નાણવાનું તહુણ ચાયા વિનાનું અસન્ય દ્વારા પોતે હૃદયમાં પણી છનાં પણ પ્રથમને માણે સુકંતાં વીરમતીએ એ આપ્યો તરીકી. આ ગણી પ્રથમને હ્રાણી હેવાનો જ તે હૃદાનો પ્રથમ હોતે.

મંત્રીએ પાતાનું નિર્દેશપણું કાયાબા પછી વળી વીરમતી એને પ્રથમ ગણે છે. ‘ચંદ્રાળ વિદ્યા સાથે કે માટે તેને બાદાર લાઘુ તેમ નથી’, એમ અહીં તે ચંગણી વધારે પૂર્ણપણે ન કરવાનું મંત્રીને કહે છે અને કેટલોક ભય પણ અતાંને છે. તે ચંગે પાતાને રણ થવાનો એ લોલ હતો ગાને મોટી હોંશ હતી તે બંધેર કરે છે. મંત્રી અવસરનો લાણું છે. પ્રાણે મંત્રીએ વિચક્ષણાં હોય છે એને તેનાબેન રાજ્ય ચાલે છે. રાજ્યનું પુષ્ટ હોય છે, તેના પ્રતાપ હોય છે પરંતુ અર્થ કુશળતા તો મંત્રીમાં હોય છે. એને તેથી સાચ મંત્રી વિચારય ગોટા મોટા મલ્લારાણાંએ પણ પોતાનાં રાજ્ય ગોયાં છે. વાણીએ વિના વાંચનું રાજ્ય રાજ રાવણે પોતાનું અહેવામાં આવે છે. તેનું કારણ વાણીએ નાણવા વણવામાં વિચક્ષણ હોય છે તોજ છે. વિલિક કોમ કેવો સમય હોણે છે તેંગ કરે છે. રાવણ અંગે બાક્ષું હતું કે ‘આ ચીતાથી મારી કર્મચારી પૂર્ણ રાતાના નથી પણ તેને એમને એમ પાછી રોણી હેવાથી મારી આળાડ નાય તેથી રાગ લક્ષ્મણને પદી લાવીને પછી સોંસું.’ આમાં વાણીએ સુછ નીચીનો સરાવ છે. જ્ઞાયારે પાછી સાંચ્ચી છે ત્યારે પછી પદી લાતવાનું શું કામ છે? પરંતુ આવ્યા વિચાર ક્ષત્રીને આવે નહીં એને તેથી ઝુંફ આપનાર સુજ મંત્રી પાણે દનો નહીં, તેથી તે વિનાશ પાણ્યો. અહીં સુમતિ મંત્રી અવસરનો લાણું હતો. તેથી તેણું વિચાર્યું કે અત્યારે વિતાતા કરવાથી ઉદ્દો વધારે વિનાશ પડાનો ચંદ્રન છે. ચંદ્રાળને પ્રગટ કરાવવાના હેતુ ઉતાવળાથી જિદ્દુ થઈ શકે તેમ નથી, તેથી રાત તો વીરમતીના હુકમ પ્રમાણે વર્તી તેના વિચારસ મેળવયો કે કેથી ચંદ્રાળના અરો પણો મળ્યો શકે. પછી એ બાળતમાં જે પ્રથતન કર્યો હયો તે થઈ શક્યો પણ પ્રથમ તેના પત્તા મેળવ્યા વિના ડિતવણું પગડું બરાયા તો હડદો વધારે અગાઉ નીપણ્યો.

મંત્રીએ વીરમતીના હુકમ પ્રમાણે આપા શહેરમાં પણ દેખ્યો. તે સાંચ: કે લોડો આર્થર્ય પાણ્યા, ગાકાણાથા, તેને તહુણ અથોઅથ લાણું; પરંતુ અત્તા પણે શાલ્કુપણું કામ લાગતું નથી. એમ વિચારી મેત થઈ ગયા, એટલે

બંદ્રોળના રાખ ઉપરથી નીકળતો સારો

૧૫

વીરમતી રાજસભામાં આવી સિહુસનપર, એસી રાજ્ય જીવાવવા લગ્ની, મંત્રીના હૃદ્ય પ્રપદચને તે મહા પ્રપદચી છતાં પણ સમજું શકી નહીં, અન્યથા મંત્રી તેની પાસે આવી તેની ઘણા પ્રચારંસા કરેછે અને તે સાંભળણને વીરમતી મનમાં કુલાયછે. આ જગતમાં માન કોને વહાનું નથી? સત્કાર કોને ગમતો નથી? પ્રશાંસા કેને પ્રિય નથી? પોતાના અધતા શુણુની અતિશાયોજિતમય પ્રશાંસા સાંભળણને પણ આ પ્રાણી મનમાં કુલાયછે. પોતે તેઓ હોવાનું માની એસે છે અને જગત પોતાને દેવો ગણતું હશે એમ માને છે. પણ જગત કોઈથી છેતારાનું નથી, હુનીઓ તો આદરશો છે. તેની પાસે ખડું ખાનું રહેતું નથી. કટી ઘોડા વળત લદે હુનીઓ ઘોડા વળાણું કે/ઘોડી નિંદાને પણ સાચા વાખાણું કે અરી નિંદા માને પણ પરિણામે સત્ય જ તરી આવે છે-તે વળતે કુનીઓ અલિમાનીની કિમત ખાનું એણી આંકે છે અને તેને તે હૃદય તે કરતાં પણ વધારે દલકો માને છે. આ વાત ખાલ રહેવાની છે.

હવે મંત્રી પાંગરમાં કુડકો દેખે છે એટલે તે બાળત વીરમતીને પ્રશ્ન કરે છે-વીરમતી ઉડાવવાના જવાન આપે છે, પણ મંત્રી તરત જ તે હુકીકતને જોઈ છી બતાવે છે. એવેંટે વીરમતીને કહેવું પડે છે કે-‘આ વાતની તરી વધારે કુછપરછ કરવી નહીં, નહીં તો તુ પણ ધીને થઈ જઈશ.’ એટલે કે ‘તને પણ કુડકો કરી જઈશ.’ મંત્રી તે વચ્ચન સાંભળી સુઝકું થઈ ગયો. જગતમાં ભય મૌખીનીની અન્યર પણ અજ્ઞાન તરેહની થાય છે. મંત્રીના મનમાં તો કુડકો કોણું છે તેના પત્તો વીરમતીથી જ મેળવવાની હેંદા હતી પણ તે મનની મનમાં રહી ગઈ. તે વળતે આ પણી વાત સાંભળી અંદર એઠેવી શુણુવળને પોતાનું દુઃખ તાનું થયું. તેણી અંગમાં આંસુ આંસુ. શેડનો ડ્રિગાર નીકળ્યો. મંત્રીના કાનમાં તેનો અવાજ આવતો તેનું મન તેની તરક્ક આકષ્માયું-શુણુવળાંએ ‘કુડકો તે ચાંદરાજત જ છે’, એમ સમબન્ધી દીખું-મંત્રી સમજું ગયો, પણ હૃદિન અવસર ન હેઠાવાથી બાળ કાંઈ જાણ્યું જ નથી એવો ટેખોાવ કરી ઉડી ગયો. એક અકાર્ય કરનાર મહેષ્ય તેને છુપાવવા માટે અનેક પ્રકારનાં અકાર્યો કરે છે, અસત્ય ગોલે છે, પ્રપદચા કરે છે અને કાઈ રહેતે પોતાનું અકાર્ય ખુલું ન પડે તેમ ચાહે છે. પરંતુ અકાર્ય તો ગમે તેવું છાનું હુદ્દું હોય તો પણ જહેરમાં આંસુ જિવાય રહેતું જ નથી. પાણને ખુલાંવી રાખવાને કોઈ શક્તિવિનાન થઈ શક્યું નથી.

વીરમતીની વાત ઘરના ખુણાની છાં, તે જહેરમાં આંસુ વિના રહી નહીં. દેશ પ્રદેશમાં પ્રસિદ્ધ થઈ ગઈ; પરંતુ અલિમાની મનુષ્યના વિવેકદ્વારી નેત્ર મંત્રીના ભય છે, તે પોતાની હુકીકત, કોઈ જાણું નથી એમજ સમજે છે. પુષ્ય મફૂતનો ઉદ્યમ હોય અને સ્વભાવની નિર્દીષ્ટાને ફાઇને દોડો દર આતા હોય

तां सुधी डोर्ड सांगे थतुं नथी; परंतु ज्ञाने पुण्य पर्सवारी ऐसे हे अने पा-
पतो धो भराये हे त्यारे उंमठ सामान्य म. पशु सांगे थाये हे अने महा-
बणवान मालुस रांक वेवो थर्ड तेन आधीन तये हे—आधीन थवुं पडे
हे. आली बण्डरज्ञन वीरमतीना पशु घेवत थां ठोर थाये हे ते आपणे
आगण लेशुं. प्राणिये प्रथमना हेणावदी मेहुं न. अमेवा नहीं परिणाम आवता
सुधी धीरज अमवी अने एषी अकिप्राय खांथयो. वीरमतीन अंतःप्रकरण्यु तेनी
पधी प्रक्ष पिक्कत्ती हनी, परंतु तेना लयथी डोर्ड गोलतुं नहेतु. सामान्य
राजनें पशु तेन आधीन थर्ड गया हना. तेमां वणी एक हेमरथ नामने
राजन सांगे पठनार नीक्कयो. तेना मनमां एम आव्युं के ‘आ रंडा (खी)
शुं राज्य नाणवी शकवानी हे ?’ तेनी वात आई हनी, परंतु हनु वीरमतीनुं
पुण्य पहांचतुं हे तेथी ते छुती शकवाना नहीं, आ हडीक्त आगणु इवे पणी
ना प्रकरण्मां वांचवानी हे. हाल तो आ प्रकरण्मां वीरमतीना प्रपूङ्यना नि-
स्नार वर्णन्यो हे तेनुं मनन कर्तव्युं हे, प्रपूङ्य क्यां सुधी शक्वी शके हे ते
ध्यानगां केवालुं हे अन एवो प्रपूङ्य डोर्ड पशु छुंहणीगां पेंगारी न थाय एवो
इड निश्चय करवानो हे. प्रपूङ्य कर्तव्य इत्ये हे त्यारे मनमां आनंद मानेहे पशु
तेना विमाक आ लव अने परलक्षमां न्यारे अत्यंत कला अनुभववा पठे हे त्यारे
आंध विकट हे. आ आंधाधमां हनु आगण वधारे वीवरण आववालुं होवाई
हाल तो आ प्रकरण्य अने तेनुं राज्य आहीक्त समाप्त कर्तव्यां आवे हे अने
आगण वीरसवालुं प्रकरण वांचवा सावधान कर्तव्यां आवे हे.

मुनि केवा होय ?

आचारी, विचारी, अहान्यारी, निर्भा, निरदंकारी, कंचनकामनीना त्वांगी,
तेन्या जन्य नहीं, तेत्यो जन्ये तहीं, तणावे तरस्या, विवाहे भूम्या, संसार्या
हेपरांगा, मोक्षनी सामा, छकायना नाथ, छकायना पीथर, छकायना छव, अनाथना
नाथ, रप्ताणुना शरण्य, अपूर्वना अपूर्व, तरणुतारणु, सकुरी जहाज समान,
कामधेनु समान, कवयवृक्ष तूर्य, अविनय चिंतामणि, दुर्जीआना वेद, निरावह
दना आधार, सन्मार्गना स्वयवनारा, सन्मार्ग चालनारा, लवोभवना हुणनो
नाश करनारा, आत्महितना अलिलापी, आत्महितना चिंतक, अद्यात्म रसीक,
अध्यात्म प्रशायल, संसार सुखना अनिष्टक अने शिववृक्षना वलुआ छेय.